हिन्दी अनिवार्य

कक्षा -12

आरोह (पद्य - खंड)

अध्याय - 1

हरिवंश राय बच्चन (आत्म परिचय : एक गीत)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर -

1. **हरिवंश राय बच्चन का जन्म कब हुआ था?**

(1) 1907 ई. इलाहाबाद (2) 1807 ई. म. प्र. (3) 1908 ई. पुणे (4) 1957 ई. पंजाब (1)

2. **मधुशाला (1935 ई.) एवं मधुकलश (1938 ई.) किस कवि के काव्य संग्रह है?**

(1) अज्ञेय (2) हरिवंशराय बच्चन (3) निराला (4) मुक्तिबोध (2)

3. **'बच्चन ग्रंथावली' कितने खंडों में प्रकाशित है?**

(1) 12 खंड (2) 15 खंड (3) 20 खंड (4) 10 खंड (4)

4. **हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा कितने खंडों में प्रकाशित है?**

(1) 2 खंड (2) 5 खंड (3) 4 खंड (4) 6 खंड (3)

5. **बच्चन की मधुशाला कविता में 'एक घूट' किसका एक घूट है?**

(1) मृत्यु का (2) बचपन का (3) जीवन का (4) आनंद का (3)

6. **हरिवंश राय बच्चन की मृत्यु कब हुई थी?**

(1) 2007 ई. कलकत्ता (2) 2008 ई. बंगाल (3) 2003 ई. मुम्बई (4) 2004ई. पुणे(3)

7. **'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' किस कवि की आत्मकथा है?**

(1) अज्ञेय (2) निराला (3) बच्चन (4) कुँवर नारायण (3)

8. **'प्रवासी की डायरी' किस कवि की डायरी है?**

(1) निराला (2) बच्चन (3) महादेवी (4) पंत (2)

9. **बच्चन के अनुसार मनुष्य का दुनिया से किस प्रकार का संबंध है?**

(1) मोह- माया का (2) प्रीति-कलह का (3) भेदभाव का (4) जन्म-मृत्यु का (2)

10. **कवि बच्चन ने जीवन को किसका सामंजस्य कहा है?**

(1) विरूद्धों (2) अपनत्व का (3) भूलों का (4) प्रीति का (1)

11. **निम्नलिखित में से छायावादोत्तर गीतिकाव्य के रचनाकार कौन है?**

(1) निराला (2) उमाशंकर जोशी (3) बच्चन (4) पंत (3)

एक पंक्ति/शब्द के प्रश्नोत्तर -

1. **'यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है बच्चन की कविता दिन जल्दी-जल्दी ढ़लता है।' की ये पंक्ति क्या प्रेरणा देती है?**

उत्तर- लक्ष्य की ओर बढ़ने तथा लक्ष्य प्राप्ति हेतु प्रयास करने का।

शेखावाटी मिशन - 100

2. **मध्ययुगीन किस फारसी कवि का मस्तानापन हरिवंशराय बच्चन की कविताओं में अर्थ-विस्तार पाता है?**

उत्तर- उमर खय्याम का।

3. **'जीवन एक तरह का मधुकलश है, दुनिया मधुशाला है, कल्पना साकी और कविता वह प्याला हे जिसे ढ़ालकर जीवन पाठक को पिलाया जाता है।' उपर्युक्त पंक्तियाँ बच्चन की किस कविता से है?**

उत्तर- मधुशाला से।

4. **बच्चन की कविताएँ किस दर्शन से प्रभावित हैं?**

उत्तर- हालावादी दर्शन से।

5. **बच्चन की 'आत्म परिचय' कविता किस गीत संग्रह से है?**

उत्तर- निशा निमंत्रण से।

6. **'आत्म परिचय' और 'निशा निमंत्रण' गीत किस कवि द्वारा लिखे गये हैं?**

उत्तर- हरिवंश राय बच्चन द्वारा।

7. **'मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ' बच्चन के इस काव्य पंक्ति में 'भार' शब्द का क्या अर्थ है?**

उत्तर- बोझ, संघर्ष और जिम्मेदारी।

8. **'साँसों के दो तार' पंक्ति में कौनसा अलंकार है?**

उत्तर- रूपक।

9. **'मैं निज उर के उद्‍गार लिए फिरता हूँ' बच्चन की इस काव्य पंक्ति में 'उद्‍गार' शब्द का क्या अर्थ है?**

उत्तर- मन के विचार एवं भावनाएँ।

10. **'मैं और, और जग और ......' पंक्ति में कौनसा अलंकार है?**

उत्तर- यमक अलंकार।

11. **'मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।' बच्चन की 'आत्म परिचय' कविता की इस पंक्ति में 'मौजों' शब्द का क्या अर्थ है?**

उत्तर- लहरें।

12. **बच्चन की प्रमुख रचनाओं का परिचय दीजिए।**

उत्तर- बच्चन ने प्रमुख रूप से मधुशाला (1935 ई), मधुबाला (1938 ई), मधुकलश (1938 ई.), निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल-अंतर, मिलनयामिनी, सतरंगिणी, आरती और अंगारे, नए-पुराने झरोखे, टूटी-फूटी कड़ियाँ (सभी काव्य संग्रह) रचनाएँ लिखी हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्न -

1. **बच्चन की आत्म परिचय कविता का मूल भाव क्या है?**

उत्तर- हरिवंशराय बच्चन अपनी आत्म परिचय कविता के माध्यम, से यह कहना चाहते हैं कि संसार को जानने से ज्यादा कठिन है मनुष्य द्वारा स्वयं की पहचान करना। जीवन की राह खट्‍टे-मीठे संघर्षों की राह है और संघर्षों के साथ सामंजस्य की राह है। मनुष्य दुनिया से अलग होकर अपनी पहचान नहीं बना सकता है।

2. **'निशा निमंत्रण' गीत का मूल भाव क्या है?**

उत्तर- हरिवंश राय बच्चन 'निशा निमंत्रण' गीत में प्रकृति के पल-पल होते परितर्वन में सजीव प्राणी वर्ग जिसमें विशेष रूप से मानवीय उल्लास को देखने का प्रयास करता है। साथ ही संघर्ष के साथ लक्ष्य -प्राप्ति तथा प्रकृति के आँखों से नहीं

शेखावाटी मिशन - 100

दिखने वाले सत्य को आत्मा से महसूस करवाना भी इस कविता का मुख्य उद्देश्य है।

3. **'नादान वहीं है हाय, जहाँ पर दाना' पंक्ति में कवि का क्या आशय है?**

उत्तर- इय पंक्ति में कवि हरिवंश राय बच्चन कहना चाह रहे हैं कि नादान प्राणी अर्थात् मनुष्य और उसका स्वार्थ वहीं तक सीमित है जहाँ पर उसको दाना अर्थात् आजीविका मिलती है। प्रत्येक मनुष्य संसार में केवल अपने स्वार्थों तक ही सीमित है।

4. **'बच्चे प्रत्याशा में होंगे,**
नीड़ो से झाँक रहे होंगे।'
बच्चन की कविता 'दिन-जल्दी-जल्दी ढलता है' की उपर्युक्त पंक्तियों का क्या आशय है?

उत्तर- उपर्युक्त पंक्तियों का आशय है कि घौंसला और घरों में बच्चे जब दिन ढ़लता है तो अपने माता-पिता के इंतजार में रहते हैं और उनके आशा रहती है कि वे अपने माता-पिता से घर लौटने पर कुछ न कुछ जरूर प्राप्त करेंगे और माता-पिता भी इस आशा में जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाते है कि घर पर बच्चे उनका इंतजार कर रहे होंगे और दिन ढ़लने तक उनको घर पहुँचना हैं। इस प्रकार से दोनों ही तरफ से प्रत्याशा रहती है जो मंजिल तक पहुँचने की प्रेरणा पैदा करती है।

5. **बच्चन के काव्य की शैलीगत विशेषताएँ लिखो।**

उत्तर- बच्चन मुख्य रूप से हालावादी दर्शन के रचनाकार है इसलिए उन्होंने अपने काव्य की भाषा सरल और जीवंत रखी है। बच्चन की काव्य भाषा में संवेदना के साथ-साथ संगीतात्मकता भी हैं। बच्चन ने अपने काव्य को आत्मकथात्मक शैली में लिखा है। काव्य में विभिन्न अलंकारों जैसे यमक, अनुप्रास, रूपक और उपमा का बहुत ही सुंदर और यथास्थान प्रयोग किया है। बच्चन के काव्य की भाषा पाठक के अन्तर्मन में जोश ओर ऊर्जा का संचार करती है।

व्याख्यात्मक प्रश्न -

1. **'मैं जला हृदय में अग्नि दहा करता हूँ**
सुख - दुःख दोनों में मग्न रहा करता हूँ
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए
मैं भव-मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।'
उपर्युक्त पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करो -

उत्तर- 'मैं जला हृदय .... बहा करता हूँ।'

(1) संदर्भ - उपर्युक्त काव्यांश आधार हिंन्दी पाठ्य पुस्तक 'आरोह' के अध्याय-एक हरिवंश राय बच्चन की कविता 'आत्म परिचय' से लिया गया है।

(2) प्रसंग - उपर्युक्त पद्यांश में कवि बच्चन प्रत्येक परिस्थितियों में चाहे वह सुख की हो या दु:ख की, में सदैव मस्त एवं प्रसन्न रहने की बात कहता है।

(3) व्याख्या - कवि कहता है कि मनुष्य जीवन में सुख और दु:ख दोनों आते है, लेकिन मनुष्य विपरीत परिस्थितियों में बेहद दु:खी हो जाता है, वह अंदर ही अंदर हृदय में अग्नि की तरफ जलता रहता हैं। लेकिन कवि चाहता है कि ऐसा न होकर मनुष्य को प्रत्येक परिस्थितियों में खुश रहना चाहिए।

कवि बच्चन कहते हैं कि मनुष्य संसार के कठिन परिस्थितियों से बचाने के लिए अनेक प्रकार के उपाय करता है लेकिन कवि स्वयं बिना किसी सहारे के इन कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए अपना जीवन मस्ती और सुखी से बीताता है। काव्य पंक्तियों में मुख्य संदेश यही है कि हमें प्रत्येक परिस्थिति में चाहे

वह विपरीत ही क्यों न हो, मजबूती से मुकाबला करते हुए समदर्शी रहना चाहिए।

(4) विशेष –
1. पद्यांश की भाषा सरल एवं लयात्मक है।
2. पद्यांश की शैली आत्मकथात्मक है।
3. रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है।
4. काव्य पंक्तियों में उत्साह स्थायी भाव भी है।

शेखावाटी मिशन – 100

अध्याय - 2
आलोक धन्वा (पतंग)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

1. कवि आलोक धन्वा का पहला और एकमात्र काव्य संग्रह 'दुनिया रोज बनती है' कब प्रकाशित हुआ?

(1) सन् 1998 (2) सन् 1898 (3) 1997 (4) 1996 (1)

2. आलोक धन्वा की पतंग कविता के कौनसे भाग को पाठ्य पुस्तक में शामिल किया गया है?

(1) पहला (2) दूसरा (3) तीसरा (4) चौथा (3)

3. कपास और बालक की भावनाओं में कौनसी समानता है?

(1) कठोरता (2) भद्दापन (3) कोमलता (4) कड़वापन (3)

3. पतंग कविता में बाल क्रियाकलापों एवं प्रकृति में आए परिवर्तनों को अभिव्यक्त करने के लिए कवि ने किसका प्रयोग किया है?

(1) समासों (2) छंदों (3) बिंबों का (4) रूपकों का (3)

एक पंक्ति/शब्द के प्रश्नोत्तर -

1. कवि आलोक धन्वा की पहली कविता कौनसी है?

उत्तर- जनता का आदमी (1972 ई. में प्रकाशित)

2. कवि आलोक धन्वा का जन्म कब और कहाँ हुआ?

उत्तर- सन् 1948 ई मुंगेर (बिहार में)

3. आलोक धन्वा की पतंग कविता उनके किस एकमात्र काव्य संग्रहों से ली गई है?

उत्तर- दुनिया रोज बनती है (1998 ई) में।

4. आलोक धन्वा की 'पतंग' कविता प्रकृति में आए विभिन्न परविर्तनों को किस ऋतु में अभिव्यक्त करती है?

उत्तर- शरद ऋतु।

5. 'खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा' से कवि का क्या आशय है-

उत्तर- वर्षा ऋतु के बाद आकाश पूर्णतया चमकीला और स्वच्छ हो जाता है जिसके कारण सुबह का सूर्य भी पूर्णत: लाल और चमकीला दिखाई देता है।

6. तेज बौछारें, लाल सवेरा, चमकीली साईकिल, चमकिले इशोर इत्यादि कविता के किस स्वरूप को स्पष्ट करते है?

उत्तर- बिंबात्मक स्वरूप को।

7. जन्म से ही 'वे' अपने साथ लाते हैं कपास उपर्युक्त पंक्ति मे 'वे' और 'कपास' शब्द किसके लिए आया है?

उत्तर- बच्चे और उनकी भावनाओं के लिए।

8. 'पतंगों के साथ वे भी उड़ रहे है' उपर्युक्त पंक्ति में वे शब्द किसके लिए आया है?

उत्तर- बालक और उनकी कोमल, चंचल, उमंग भरी भावनाओं के लिए।

9. 'दिशाओं का मृदंग की तरह बजना' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- जब बालक पतंग उड़ाते है तो वे अपने हाथ पैरों से और अपनी विभिन्न शारीरिक क्रियाओं से अनेक प्रकार की आवाजें निकालते है। बालकों की ये आवाजें बड़ी ही कोमल और उल्लास भरी होती है जो दिशाओं को मृदंग जैसी मधुर ध्वनि प्रदान करती है।

शेखावाटी मिशन - 100

लघुत्तरात्मक प्रश्नोत्तर –

1. आलोक धन्वा की 'पतंग' कविता का मूल भाव क्या है?

उत्तर– आलोक धन्वा की 'पतंग' कविता एक लम्बी कविता है। इस कविता में कवि ने बालक के निश्छल स्वभाव की समानता प्रकृति की निश्छलता एवं रंगीनता से की है। जिस प्रकार से शरद ऋतु में प्रकृति में नया सौंदर्य भर जाता है उसी प्रकार बालक मन में भी इच्छाओं और उमंगों का सौंदर्य होता है और बालक उस उमंग और सौंदर्य के साथ पतंग की तरह अनंत ऊँचाईयों को छूना चाहता है।

2. आलोक धन्वा की 'पतंग' कविता 'भय' और 'साहस' का मिलाजुला स्वरूप प्रस्तुत करती है। स्पष्ट करो।

उत्तर– 'पतंग' कविता 'भय' और 'साहस' का मिला जुला स्वरूप है क्योंकि बच्चे जब पतंग उड़ाते है तो ऊँची छतों एवं उनकी दिवारों पर चढ़ जाते हैं जहाँ से गिरने का भय होता है लेकिन फिर भी गिरते–संभलते हुए बेहद खतरनाक स्थानों पर भी पतंग के साथ पहुँच जाते हैं और साहस के साथ भय पर विजय पाते है।

3. 'पतंग' कविता में बालक की इच्छाओं और उमंगों की तुलना शरद ऋतु से क्यों की है?

उत्तर– बालक की इच्छाओं और उमंगों की तुलना शरद ऋतु से की गई है क्योंकि शरद ऋतु में प्रकृति में नयापन, उल्लास एवं सौन्दर्य आता है, उसी प्रकार बालक मन भी नित नई उमंगों, इच्छाओं और क्रियाकलापों से भरा रहता है।

4. 'भादो (अँधेरे) के बाद शरद (उजाला) का आना' उपर्युक्त काव्य पंक्तियों का पतंग कविता से क्या संबंध है?

उत्तर– भादों (अँधेरे) के बाद जिस प्रकार से शरद (उजाला) ऋतु आती है, अर्थात् प्रकृति में नई उमंग, उल्लास और सौंदर्य आ जाता है, उसी प्रकार बालक जब 'पतंग' उड़ाता है तो अनेक खतरनाक स्थानों से गुजर कर मन के डर और भय को दूर करता हुआ पतंग को आकाश की ऊँचाईयों में पहुँचाकर भय पर विजय पाता है। प्रकृति में भादों के बाद शरद आना ही बालक द्वारा भय दूर करके विजय प्राप्त करना है। यही पतंग कविता की सार्थकता सिद्ध करता है।

5. पतंग के लिए सबसे हल्की और रंगीन चीज, सबसे पतला कागज, सबसे पतली कमानी जैसे विशेषणों का प्रयोग क्यों किया गया है?

उत्तर– पतंग कविता में उपर्युक्त विशेषण पतंग के प्रति कौतूहल, जिज्ञासा तथा आकर्षण के भाव को प्रकट करते है तथा साथ ही इन सभी का संबंध बालक के कोमल मन विचार, भावनाओं और अनुभूतियों से भी है जिनको बालक पतंग के प्रति प्रकट करता है। जैसा कोमल स्वरूप पतंग का होता है वैसा ही स्वरूप बालक का होता है।

शेखावाटी मिशन – 100

अध्याय – 3
कुँवर नारायण (कविता के बहाने, बात सीधी थी पर)

1. **कुँवर नारायण का सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रबंध काव्य कौनसा है?**
(1) कालजयी (2) आत्मजयी (3) इन दिनों (4) अपने सामने (2)

2. **कुँवर नारायण की कविता 'कविता के बहाने' उनके किस संग्रह से ली गई है?**
(1) इन दिनों (2) अपने सामने (3) कोई दूसरा (4) आत्मजयी (1)

3. **'उसे पाने की कौशिका में**
भाषा को उलटा पलटा'
उपर्युक्त पंक्ति में 'उसे' शब्द किसके लिए आया है?
(1) कविता (2) बात (3) शब्द (4) पेच (2)

4. **कविता का काव्य और माध्यम् कौनसा होना चाहिए?**
(1) सहज (2) अलंकृत (3) घुमावदार (4) द्वंद्वात्मक (1)

5. **'पेंच खोलने के बजाय' पंक्ति में पेंच शब्द का क्या अर्थ है?**
(1) अलंकार (2) विचार (3) कल्पना (4) कील (2)

6. **'बात की चूडी मरना' में कौनसा अलंकार है?**
(1) उपमा (2) यमक (3) रूपक (4) अनुप्रास (3)

एक पंक्ति/शब्द के प्रश्नोत्तर –

1. **चक्रव्यूह (1956 ई.) किस कवि का काव्य संग्रह है?**
उत्तर– कुंवर नारायण का।

2. **भविष्य में कविता का अस्तित्व नहीं रहने का मुख्य कारण कवि ने क्या बताया?**
उत्तर– बढ़ता हुआ यांत्रिक दबाव।

3. **कविता की समानता कवि कुँवर नारायण ने किससे की है?**
उत्तर– बच्चों के असीम सपनों से और खेल से।

4. **कुंवर नारायण की कविता 'बात सीधी थी' किस काव्य संग्रह से ली गई है?**
उत्तर– 'कोई दूसरा नहीं' संग्रह से।

5. **कवि कुंवर नारायण के अनुसार अच्छी कविता कब बनती है?**
उत्तर– अच्छी कविता तब बनती है जब सही बात सही शब्द से जुड़ती है।

6. **'कविता एक उड़ान है' उपर्युक्त पंक्ति में 'उड़ान' शब्द किसके लिए आया है?**
उत्तर– यहाँ 'उड़ान' शब्द कवि और कविता की कल्पना एवं भावात्मक उड़ान के लिए आया है।

7. **कविता के लिए 'बिना मुरझाए महकने के माने' जैसे शब्दों का प्रयोग क्यों हुआ है?**
उत्तर– कविता के विचार और भावार्थ कभी भी पुराने और संकुचित नहीं होते हैं।

8. **'बात की चूड़ी मरने' से क्या अभिप्राय है?**
उत्तर– विद्वता प्रदर्शन के कारण भाषा में कई बार कवि कठिन और निरर्थक शब्दों का प्रयोग करते हैं जिसके कारण भाषा अपने मूल अर्थ से भटककर निष्प्रभावी हो जाती है। मूल अर्थ से या विचार से भटकना ही बात की चूड़ी मरना कहलाता है।

शेखावाटी मिशन – 100

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर –

1. **'सब घर एक कर देने के माने**
बच्चा ही जाने।'
उपर्युक्त पंक्ति का भावार्थ लिखो।

उत्तर– उपर्युक्त पंक्ति में कविता की समानता बच्चों की खेल भावना से की गई है। जिस प्रकार से बच्चे खेल में अपनत्व का भाव रखते हैं और खेलते समय उनमें आपसी किसी भी प्रकार की भेद–भाव की भावना नहीं होती है। उसी प्रकार कविता के भाव की सीमा असीम होती है, उसमें भी किसी भी प्रकार का मानवीय एवं भावनात्मक भेद–भाव नहीं होता है।

2. **मैं पेच को खोलने के बजाय**
उसे बेतरह कसता चला जा रहा था।
उपर्युक्त पंक्ति में बेतरह कसने का क्या अभिप्राय है?

उत्तर– बेतरह कसने का अर्थ है बात और उसकी भाषा में अनावश्यक और कठिन शब्दों का प्रयोग करना। कई बार साधारण बात को कहने के लिए उसमें शब्दों का अनावश्यक प्रयोग जबरन किया जाता है और भाषा शब्दों के जाल में फँस जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि भाषा अपने मूल भाव से परे हट जाती है और उसका अर्थ वास्तविकता से दूर चला जाता है।

3. **'हार कर मैने उसे कील की तरह उसी जगह ठोक दिया' उपर्युक्त पंक्ति का आशय स्पष्ट करो।**

उत्तर– साधारण बात को कहने और समझाने के लिए जब साधारण शब्दों की बजाय उसमें अलंकृत भाषा, बोझिल शब्दावली और जटिलता लाने का प्रयास किया जाता है, तो मूल बात के भाव या विचार की कसावटता समाप्त हो जाती है और बात अपने मुख्य लक्ष्य से दूर हटती चली जाती है। फिर वह बात सुधरने के बजाय और अधिक बिगड़ जाती है। और फिर उस बात को हारकर वहीं का वहीं छोड़ दिया जाता है जो कि चूड़ी मरी हुई कील को ठोकने के समान ही है।

4. **'भाषा को सहूलियत से बरतने' का क्या अभिप्राय है?**

उत्तर– भाषा को सहूलियत से बरतने का अभिप्राय है कि जब भी हम भाषा का प्रयोग करे तब यह ध्यान रखना चाहिए कि उसका वास्तविक एवं प्राकृतिक स्वरूप बना रहे। भाषा को काम में लेते समय उसमें दिखावटीपन एवं बोझिलपन नहीं होना चाहिए। भाषा का वास्तविक अर्थ सीधे एवं सरल रूप से समझ में आ जाना चाहिए। उसमें घुमाव–फिराव नहीं होना चाहिए।

व्याख्यात्मक प्रश्नोत्तर –

1. **उसे पाने की कौशिका में**
भाषा को उल्टा पलटा
घुमाया फिराया
कि बात या तो बने
या फिर भाषा से बाहर आए
लेकिन इससे भाषा के साथ–साथ
बात और भी पेचीदा होती चली गई।

शेखावाटी मिशन – 100

उपर्युक्त काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उत्तर- उसे पाने की............ होती चली गई।

(1) संदर्भ – उपर्युक्त काव्यांश आधार हिंदी पाठ्य पुस्तक के अध्याय तीन कुंवर नारायण की कविता 'बात सीधी थी पर' से लिया गया है।

(2) प्रसंग – उपर्युक्त प्रसंग में कवि उन लेखकों और कवियों पर कटाक्ष कर रहा है जो अपनी लेखनी को प्रभावशाली बनाने के लिए अनावश्यक शब्दों और घुमावदार वाक्यों का प्रयोग करते हैं।

(3) व्याख्या – कवि कहता है कि बात को सुधारने के बजाय उसे और अधिक बोझील बना दिया और फिर उसे वास्तविक स्वरूप में लाने के चक्कर में भाषा को अनेक तरीकों से उल्टा बनाने की कोशिश भी की। लेकिन इन सभी उपायों के बावजूद भी भाषा और अधिक क्लिष्ट होती चली गई, वह अपने वास्तविक स्वरूप से दूर हो गई। उसका अर्थ भी बदल गया था।

इस प्रकार से कवि ने बात को और अधिक प्रभावशाली बनाने के चक्कर में या बात बनाने के चक्कर में बात के प्रभावी रूप से समाप्त कर दिया।

(4) विशेष –
1. काव्यांश में सरल शब्दावली का प्रयोग हुआ है।
2. काव्यांश में विशेष बात को साधारण भाषा में स्पष्ट किया है।
3. प्रश्नाकुल शैली का प्रयोग हुआ है।

शेखावाटी मिशन – 100

अध्याय - 4
रघुवीर सहाय (कैमरे में बंद अपाहिज)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर -

1. कवि रघुवीर सहाय का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

(1) 1929 ई लखनऊ (2) 1829 ई बिहार (3) 1939 ई. पंजाब (4) 1928 ई आगरा (1)

2. रघुवीर सहाय अज्ञेय द्वारा संपादित किस सप्तक के कवि थे?

(1) पहला सप्तक (2) दूसरा सप्तक (3) तीसरा सप्तक (4) चौथा सप्तक (2)

3. अज्ञेय द्वारा संपादित दूसरे सप्तक का प्रकाशन कब हुआ था?

(1) 1951 ई. मे (2) 1943 ई. में (3) 1953 ई. में (4) 1971 ई. में (1)

4. आधुनिक हिन्दी कविता 'रामदास' के लेखक कौन है?

(1) अज्ञेय (2) रघुवीर सहाय (3) निराला (4) कुंवर नारायण (2)

5. पीड़ा को परदे पर उभारते समय दूरदर्शन उद्घोषक का व्यवहार कैसा हो जाता है?

(1) संवेदनात्मक (2) मैत्रीपूर्ण (3) संवेदनहीन (4) हंसमुख (3)

6. 'कैमरे में बंद आपाहिज' कविता अपाहिज व्यक्ति के लिए किस प्रकार की सोच अपनाने के लिए प्रेरणा देती है?

(1) कठोरतापूर्ण (2) निरंकुश (3) संवेदनात्मक (4) क्रूरतापूर्ण (3)

7. अपाहिज व्यक्ति से कैमरे के सामने अनेक प्रकार के प्रश्न पूछे जाने के पीछे क्या उद्देश्य है?

(1) कार्यक्रम को रोचक एवं संवेदनात्मक बनाना (2) कार्यक्रम को छोटा बनाना

(3) कार्यक्रम को दुरूह बनाना (4) कार्यक्रम को बड़ा बनाना (1)

8. 'कैमरे में बंद अपाहिज' जैसे कार्यक्रम दूरदर्शन पर किस उद्देश्य को पूरा करते हैं?

(1) राजनीति (2) धार्मिक (3) शारीरिक (4) सामाजिक (4)

एक पंक्ति/शब्द के प्रश्नोत्तर -

1. रघुवीर सहाय की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखो।

उत्तर- सीढ़ियों पर धूप में, आत्महत्या के विरूद्ध, हँसो-हँसो जल्दी हँसो (सभी कविता संकलन है)

2. रघुवीर सहाय का संबंध किस कविता से है?

उत्तर- समकालीन कविता से।

3. रघुवीर सहाय की कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' उनके किस संग्रह से ली गई है?

उत्तर- लोग भूल गए है, संग्रह से।

4. 'हमें दोनों एक संग रूलाने है' उपर्युक्त पंक्ति में दोनों शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

उत्तर- यहाँ दोनों शब्द दर्शक और अपाहिज व्यक्ति के लिए प्रयुक्त है।

शेखावाटी मिशन - 100

5. **'हम दूरदर्शन पर बोलेंगे**
हम समर्थ शक्तिवान।'
उपर्युक्त पंक्तियों में 'हम समर्थ शक्तिवान' वाक्यांश किसके लिए आया है।

उत्तर- उपर्युक्त वाक्यांश दूरदर्शन का उद्घोषक स्वयं के लिए प्रयुक्त करता है।

6. **किसी की पीड़ा को बहुत बड़े दर्शक वर्ग तक पहुँचाने वाले व्यक्ति के लिए क्या-क्या आवश्यक है?**

उत्तर- उस व्यक्ति में उस पीड़ा के प्रति स्वयं संवेदनशील होने और दूसरे को संवेदनशील बनाने की कला होनी चाहिए।

7. **रघुवीर सहाय की कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' किस उद्‌देश्य को पूरा करती है?**

उत्तर- यह कविता टेलिविजन स्टूडियों के भीतर की उस दुनिया को समाने लाने का प्रयास है जो दु:ख-दर्द, यातना-वेदना को बेचना चाहती है।

8. **'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में किस शैली का प्रयोग हुआ है?**

उत्तर- संवाद एवं नाटकीय शैली का।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर -

1. **रघुवीर सहाय की कविताओं का मुख्य विषय क्या है?**

उत्तर- रघुवीर सहाय समकालीन हिंदी कविता के कवि रहे हैं, इसी कारण उन्होंने अपनी कविताओं में समकालीन प्रशासनिक व्यवस्था एवं गली मुहल्लों के वास्तविक चरित्र के साथ-साथ समाज में भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने वाले कारक जैसे बस, रेल, बाजार, संसद, दफ्तर, सड़क, चोराहे की अर्थव्यवस्था और इन कारकों की वास्तविक स्थिति के बारे में खुलकर लिखा है।

रघुवीर सहाय की लेखन की विषय-वस्तु में ईमान, संवेदनशीलता, मार्मिकता, व्यंग्य और सहजता दिखाई देती है। बड़े विषयों को अपनी कविताओं में स्थान देने की बजाय छोटे विषयों अर्थात् लघु की महत्ता को स्थान देने में विशेष रूचि दिखाते हैं।

2. **'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता का मूल भावार्थ समझाओं।**

उत्तर- 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में पत्रकारिता अर्थात् मीडिया के कारोबारी दबाव के कारण पैदा होने वाली स्वार्थपरता को सामने लाने का प्रयास किया गया है। मीडिया अपने कारोबार को चलाने के लिए एवं विख्यात बनाने के लिए शारीरिक रूप से असहाय व्यक्ति के साथ भी संवेदनहीनता का व्यवहार कर देती है। कविता में यह भी बताने का प्रयास किया है कि मीडिया की समझ में व्यक्ति की पीड़ा बाजारू है और मीडिया उस पीड़ा को अपने व्यापार का हिस्सा मानती है। अपने कार्यक्रमों को प्रसारित करने के लिए तथा उसे अत्यंत रोचक एवं संवेदनात्मक बनाने के लिए एक शारीरिक रूप से अक्षम मानव के साथ भी क्रूरता और संवेदनहीनता के व्यवहार का प्रदर्शन दर्शकों के सामने कर देती है।

3. **'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के आधार पर बताओं कि दूरदर्शन का कार्यक्रम पूर्णतया रोचक और संवेदनात्मक कब बनता है?**

उत्तर- टेलिविजन और कैमरे के सामने प्रसारित होने वाले कार्यक्रम जिस प्रकार से दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किये जाते है उनका वह रूप वास्तविक नहीं होता है। परदे के पीछे उनका बनावटी रूप छिपा होता है। कार्यक्रम को पूर्णतया सफल बनाने के लिए कैमरे वाले कई तरह से नाटकीय स्वरूपों एवं भंगिमाओं का निर्माण करते है जो दर्शकों को वास्तविक लगती है लेकिन उनका स्वरूप वास्तव में वैसा नहीं होता है। इस प्रकार की बनावटी और पीड़ादायक

शेखावाटी मिशन - 100

परिस्थितियों को देखकर दर्शक और परदे पर प्रस्तुतकर्ता व्यक्ति में एक जैसे मनोभाव पैदा होने लगे अर्थात् दोनों ही रोने लगे या संवेदनात्मक हो जाए तो टेलिविजन का कार्यक्रम पूर्णतया सफल माना जाता है।

4. कवि रघुवीर सहाय कविता के अंत में यह क्यों कह रहे हैं कि 'परदे पर वक्त की कीमत है।' स्पष्ट करो।

उत्तर- परदे पर प्रस्तुत लगभग सभी कार्यक्रम व्यावसायिक होते हैं। उन कार्यक्रमों को दर्शक ज्यादा से ज्यादा देख सके इसके लिए कार्यक्रमों को रोचक और नाटकीय बनाने का प्रयास किया जाता है। कार्यक्रम अधिक रोचक और नाटकीय हो इसके लिए पात्र व्यक्ति को पूर्वाभ्यास करवाया जाता है। इसी प्रकार से जब कोई अपाहिज व्यक्ति कैमरे के सामने रोने ही वाला होता है तो कैमरा हटा लिया जाता है। जिससे कार्यक्रम में रोचकता, नाटकीयता और संवेदनात्मकता आ जाती है। कई बार कैमरा हटाने के लिए यह भी बहाना बना लिय जाता है कि परदे पर वक्त की कीमत है और यदि बार-बार के प्रयास के बाद भी वह अपाहिज व्यक्ति नहीं रोता है तो भी यही वाक्य कहकर कैमरे को हटा लिया जाता है कि परदे पर वक्त की कीमत है।

व्याख्यात्मक प्रश्नोत्तर -

1. फिर हम परदे पर दिखलाएँगे
फूली हुई आँख की एक बड़ी तसवीर
बहुत बड़ी तसवीर
और उसके होंठों पर एक कसमसाहट भी।
उपर्युक्त पद्यांश की सप्रंसग व्याख्या करो।

उत्तर- फिर हम परदे................ कसमसाहट भी।

(1) संदर्भ - उपर्युक्त पद्यांश आधार हिन्दी पाठ्य-पुस्तक आरोह के अध्याय चार रघुवीर सहाय की कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' से अवतरित है।

(2) प्रसंग - उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने व्यापार के लालच में दूरदर्शन की संवेदनहीन कार्य शैली का चित्रण किया है।

(3) व्याख्या - कवि रघुवीर सहाय कहते हैं कि मीडियाकर्मी अपने कार्यक्रम को रोचक और आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए अपाहिज व्यक्ति से भी बनावटी और संवेदनहीन व्यवहार करते हैं। अपाहिज व्यक्ति को स्वयं को अत्यंत ही दयनीय बनाकर दिखाने के लिए मजबूर कर दिया जाता है। इस प्रकार का हृदयहीन कार्य करके दूरदर्शनकर्मी अपने कार्यक्रम को विशेष बनाते है और दर्शकों का ध्यान कार्यक्रम की तरफ करके पैसा कमाते है। इन पंक्तियों के माध्यम् से कवि मीडियाकर्मियों की संवेदनहीनता और बाजारूपन की ओर संकेत करता है।

(4) विशेष - 1. पद्यांश की भाषा सीधी और सरल है।
2. पद्यांश की शैली नाटकीय एवं व्यंग्यात्मक है।
3. पद्यांश में करूण रस की अभिव्यक्ति हुई है।

शेखावाटी मिशन - 100

अध्याय - 5
गजानन माधव मुक्तिबोध (सहर्ष स्वीकारा है)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर -

1. **मुक्तिबोध का जन्म कब हुआ था?**
   (1) 13 नवम्बर, 1917 (2) 13 नवम्बर, 1817 ई (3) 23 नवम्बर, 1917 ई (4) 11 नवम्बर, 1917 ई (1)
2. **'चाँद का मुँह टेढ़ा है' किस कवि का कविता संग्रह है?**
   (1) रघुवीर सहाय (2) मुक्तिबोध (3) निराला (4) कुंवर नारायण (2)
3. **'काठ का सपना' किस कवि द्वारा रचित कथा साहित्य है?**
   (1) मुक्तिबोध (2) निराला (3) रघुवीर सहाय (4) पंत (1)
4. **मराठी संरचना से प्रभावित लम्बे वाक्य किस कवि की कविताओं की विशेषता है?**
   (1) निराला (2) मुक्तिबोध (3) बच्चन (4) पंत (2)
5. **'मुक्तिबोध की कविता सघर्ष स्वीकारा है' उनके किस संकलन से ली गई है?**
   (1) चाँद का मुँह टेढ़ा (2) भूरी-भूरी खाक धूल
   (3) विपात्र (4) सतह से उठता आदमी (2)
6. **'सहर्ष स्वीकारना' का कवि के अनुसार मूल भाव क्या है?**
   (1) स्वीकारना (2) प्रसन्नता से स्वीकारना (3) प्रसन्नता से नकारना (4) गुस्सा करना (2)
7. **सहज स्नेह की उष्मा कवि को विरह में किस प्रकार की लगती है?**
   (1) दी परशिखा-सी (2) अग्निशिखा - सी (3) सरस - सी (4) ममतामयी - सी (2)
8. **'ममता के बादल की मँडराती कोमलता भीतर पिराती है' उपर्युक्त पंक्ति में कौनसा अलंकार है?**
   (1) अनुप्रास (2) यमक (3) मानवीकरण (4) विभावना (3)
9. **'दक्षिण ध्रुवी अंधकार - अमावस्या' पंक्ति में कौनसा अलंकार है?**
   (1) यमक (2) मानवीकरण (3) रूपक (4) प्रतीप (3)

एक पंक्ति/शब्द के प्रश्नोत्तर -

1. **मुक्तिबोध का जन्म किस स्थान पर हुआ था?**

उत्तर- श्योपुरा, ग्वालियर (म.प्र.)

2. **'सहर्ष स्वीकारा है' कविता में कवि मोह से मुक्ति पाने के बाद भूलने की प्रक्रिया को किस तरह घटित होते देखना चाहता है?**

उत्तर- अमावस की तरह।

3. **कवि मुक्तिबोध अमावस के अँधेरे से सामना क्यों करना चाहता है?**

उत्तर- कवि अँधेरे से सामना करके अपने मन की ताकत बढ़ाना चाहता है।

4. **कवि मुक्तिबोध के अनुसार मनुष्य के अंदर अज्ञात भय कौन पैदा करता है?**

उत्तर- लगातार बढते भौतिक और मानसिक अवलंब मनुष्य के अंदर अज्ञात भय पैदा करते है।

5. **मुक्तिबोध ने मनुष्य की संपूर्ण चेतना को कबीरी चादर क्यों कहा है?**

उत्तर- क्योंकि मनुष्य की संपूर्ण चेतना अंधकार-प्रकाश, दु:ख-सुख, भूल-सुधि के संघर्षों से भरी हुई है।

शेखावाटी मिशन - 100

6. **'दक्षिणी ध्रुवी अंधकार - अमावश्या शरीर पर' पंक्ति में दक्षिण ध्रुवी अंधकार से क्या तात्पर्य है?**

उत्तर- जिस प्रकार से दक्षिण ध्रुवों पर लंबे समय तक अंधकार रहता है उसी प्रकार कवि भी प्रिय बिछुड़ने की लम्बी अवधि को दक्षिण ध्रुवों के अंधकार के समान मानकर भोगने को तैयार है। यहाँ कवि का एकांकी जीवन उभरकर सामने आया है।

7. **भीतर वह, ऊपर तुम**
मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात-भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है।
उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में 'तुम' और 'तुम्हारा' शब्द किसके लिए आया है?

उत्तर- उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में 'तुम' और 'तुम्हारा' शब्द उन सभी आत्मीय जनों के लिए आया है जो विशाल विश्व की उलझनों को सुलझाने में कवि की मदद करते हैं। इसमें माँ, पत्नी, बहन, सहचरी कोई भी हो सकता है।

8. **'गरबीली गरीबी' से क्या तात्पर्य है?**

उत्तर- धन की न्यूनता होने पर भी मन में हीन भाव नहीं लाना।

लघुत्तरात्मक प्रश्नोत्तर -

1. **'सहर्ष स्वीकार है' कविता का मूल उद्देश्य क्या है?**

उत्तर- मनुष्य को अपने जीवन में अनेक प्रकार की परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। सुख-दु:ख, हर्ष-विषाद, हार-जीत, संघर्ष इत्यादि परिस्थितियाँ मनुष्य जीवन के समानान्तर चलती रहती है। मनुष्य को इस प्रकार की विभिन्न परिस्थितियों को प्रसन्नता के साथ स्वीकार करते हुए शांतिपूर्ण जीवन-यापन करना चाहिए। मनुष्य को चाहिए कि वह हर परिस्थिति में सहज भाव से ही रहे। इस प्रकार के सहज जीवन यापन में समुदाय के लोग मददगार हो सकते है चाहे उनमें किसी भी प्रकार का संबंध क्यों न हो।

2. **'जीवन का निष्कर्ष यही है कि वह किसी का नहीं, क्योंकि सब उसकी परछाई है।' कवि ने ऐसा क्यों कहा है और यहाँ 'उसकी' शब्द किसके लिए आया है?**

उत्तर- कवि मुक्तिबोध के अनुसार मनुष्य जीवन में अनेक प्रकार की परिस्थितियाँ और भाव एक साथ चलते हैं। कवि ने तो दृढ़ता और जघन्य कठोरता को भी बड़े मानवीय मूल्य माना है। कवि के अनुसार भूल जाना भी एक कला है, अति किसी भी चीज की अच्छी नहीं है। मनुष्य को अधिक प्रकाश भी चौंधिया देता है और कई बार अमावस का अँधेरा भी संबल प्रदान करता है। अँधेरा-उजाला, सुख-दु:ख, स्मृति-विस्मृति इन सभी परिस्थितियों को कबीरी चादर मानकर मनुष्य को अपनी आत्मा के चारों ओर लपेट लेना चाहिए। इस प्रकार से यह जीवन किसी एक का नहीं है बल्कि अनेक उलझनों का है और इन उलझनों को सुलझाने तथा उलझाने में परछाई के रूप में माँ, पत्नी, बहन, सहचरी इत्यादि किसी की भी भूमिका हो सकती है। यहाँ 'उसकी' शब्द इन्ही भूमिका निभाने वाले लोगों के लिए आया है।

3. **कविता का शीर्षक 'सहर्ष स्वीकारा है' और इसके विपरीत कवि कहता है कि 'बहलाती सहलाती आत्मीयता बरदाश्त नहीं होती है' कवि के इस अन्तर्विरोध का क्या कारण है?**

उत्तर- 'सहर्ष स्वीकारा है' कविता में कवि जीवन की विभिन्न परिस्थितियों को प्रसन्नता के साथ स्वीकार करने की बात कहता है। कवि इन परिस्थितियों को संघर्ष के साथ स्वीकार करना चाहता है न कि बहलाती सहलाती और दिखावटी आत्मीयता के साथ। कवि वास्तविकता के हर दंड और पुरस्कार को स्वीकार करता है लेकिन उसे मन बहलाने वाली

शेखावाटी मिशन - 100

क्षणिक आत्मीयता स्वीकार नहीं है। कवि कहता है कि अत्यधिक आत्मीयता मानव को कमजोर बना देती है, अति किसी भी प्रकार की अच्छी नहीं होती है। कवि मिलन के उजाले का सुख भोगने के साथ बिछुड़ने के गहरे अँधकारमय अमावस को भोगने के लिए तैयार रहने को कहता है। कवि के अंदर माँ, पत्नी, बहन, सहचरी के स्नेह की सहज उष्मा है तो दूसरी तरफ विरह की अग्निशिखा उद्दीप्त रखने को कहता है। इस प्रकार से कवि मनुष्य में उत्पन्न होने वाले मानसिक द्वंद्वों का सहज चित्रण करता है।

4. सचमुच मुझे दंड हो कि हो जाऊ
पाताली अँधेरे की गुहाओं में विवरों में
धुँए के बादलों में
बिल्कुल में लापता
लापता कि वहाँ भी तो तुम्हारा ही सहारा है।
उपर्युक्त पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करो।

उत्तर- कविता की इन पंक्तियों में कवि जीवन की प्रत्येक परिस्थितियों को सहर्ष और सहज भाव से स्वीकार करता है। कवि कठिन परिस्थितियों के दण्ड को भी सहर्ष स्वीकार करता है और इस प्रकार के दण्ड में भी अपने प्रिय मिलन की आशा रखता है। अपने एकांकी जीवन में भी कवि प्रिय की स्मृति के सहारे जीवन यापन करना चाहता है। कवि अज्ञात सत्ता से सहारा चाहता है और उसी में अपने स्नेह को प्रकट करता है। जीवन की अच्छी और बुरी सभी बातों को सहर्ष स्वीकार करना चाहता है। यहाँ कवि का अपने प्रिय के प्रति आत्मीय और समर्पित भाव की प्रकट होता है।

शेखावाटी मिशन – 100

अध्याय - 6
शमशेर बहादुर सिंह (उषा)

1. शमशेर बहादुरसिंह का जन्म कब हुआ था?

(1) 13 जनवरी, 1911 ई (2) 13 जनवरी, 1811 ई

(3) 23 जनवरी, 1911 ई (4) 11 जनवरी, 1913 ई (1)

2. 'उर्दू और हिन्दी का दोआब' नाम से कौनसा कवि प्रसिद्ध है?

(1) अज्ञेय (2) बच्चन (3) कुंवर नारायण (4) शमशेर बहादुर सिंह (4)

3. 'उषा' कविता में चित्रण है?

(1) सूर्योदय के समय का (2) सूर्यास्त का

(3) सूर्योदय से पूर्व का (4) सूर्योदय के बाद का (3)

4. 'उषा' कविता में जीवन के किस परिवेश का चित्रण हुआ है?

(1) शहरी (2) ग्रामीण (3) महानगरीय (4) उद्योगों का (2)

5. प्रयोगवादी काव्य का प्रारम्भ कब से माना जाता है?

(1) 1944 ई से (2) 1943 ई से (3) 1946 ई. से (4) 1843 ई. से (2)

एक पंक्ति/शब्द के प्रश्नोत्तर -

1. शमशेर बहादुरसिंह की प्रमुख रचनाओं का परिचय दीजिए।

उत्तर- कुछ कविताएँ, कुछ और कविताएँ, चुका भी हूँ नहीं मैं, इतने पास अपने, बात बोलेगी, काल तुझसे छोड़ है मेरी, उर्दू-हिन्दी कोश।

2. विचारों के स्तर पर प्रगतिशील, शिल्प के स्तर पर प्रयोगधर्मी कवि और बिंबधर्मी कवि के रूप में किसकी पहचान है?

उत्तर- शमशेर बहादुरसिंह की।

3. 'राख से लीप हुआ चौका' पंक्ति में प्रकृति के किस स्वरूप का चित्रण है?

उत्तर- उपर्युक्त पंक्ति में सूर्योदय से पूर्व आकाश और धरा पर छाने वाले कोहरे और ओस की नमी का चित्रण है।

4. प्रयोगवादी कविता में किस प्रकार के नवीन प्रयोग हुए हैं?

उत्तर- प्रयोगवादी कविता में शिल्प और भाव से संबंधित नवीन प्रयोग हुए है।

लघूतरात्मक प्रश्नोत्तर -

5. 'उषा' कविता का मुख्य भावार्थ क्या है?

उत्तर- प्रकृति के प्रत्येक पल का अपना अलग अंदाज और आनंद है। प्रकृति के इन विभिन्न रूपों में सूर्योदय से ठीक पूर्व होने वाले प्रत्येक क्षण के परिवर्तनों का अपना अलग ही सौंदर्य है। इस समय प्रकृति बहुत ही काम समय में मनुष्य के सामने अनेक मनोरम दृश्यों को प्रस्तुत करती है। कवि ने प्रकृति के इस मूक स्वरूप को जीवन की गतिविधियों से जोड़ने का प्रयास करता है। प्रकृति के सूर्योदय से पूर्व के इन दृश्यों को आम ग्रामीण जीवन की गतिविधियों एवं ग्रामीण क्रियाकलापों से जोड़ने का प्रयास कवि करता है। मुख्य रूप से प्रकृति के इस स्वरूप को कवि आम आदमी की दैनिक गतिविधियों से जोड़ता है। कवि कहना चाहता है कि प्रकृति का यह मनोरम रंग ही जीवन का वास्तविक

शेखावाटी मिशन - 100

रंग है। गहन अंधकार को चीरकर धीरे-धीरे होने वाला सूर्योदय मानव धैर्य और सावधानी के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है, जीवन को गतिशील बनाता है।

2. जादू टूटता है इस उषा का
सूर्योदय हो रहा है।
उपर्युक्त पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करो।

उत्तर- उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम् से कवि कह रहे है कि सूर्योदय से पूर्व के दृश्यों में अपना अलग सौंदर्य होता है और यह सौंदर्य एक जादू के समान होता है। जिस प्रकार से जादू का खेल देखकर मनुष्य आश्चर्य से भर जाता है। ठीक उसी प्रकार सूर्योदय से पूर्व के दृश्य भी देखने वालों को आश्चर्य-चकित करते हैं। जादू के खेल में हर दृश्य का अपना अलग रंग होता है उसी प्रकार सूर्योदय से पूर्व पल-पल परिवर्तित होते इन दृश्यों के भी अनेक रंग होते हैं। ज्यों-ज्यों सूर्य क्षितिज से आकाश की ओर बढ़ता है तो धीरे-धीरे यह प्राकृतिक सौंदर्य का जादू भी समाप्त होता है।

3. प्रयोगावादी काव्य की विशेषताएँ लिखो।

उत्तर- प्रयोगवादी कविता का प्रारम्भ 1943 ई. में माना जाता है। जैसा कि प्रयोग शब्द से ही अर्थ स्पष्ट हो जाता है कि नये प्रकार से प्रयोग, अर्थात् काव्य के क्षेत्र में भी नए प्रयोगों का होना, ये सभी प्रयोग काव्य में भाषा, भाव, शिल्प, नवीन उपमानों तथा अर्थ को लेकर किए गये। कविता के शिल्प में नवीन बिंब, प्रतीक, उपमान तथा नये विधानों को प्रयुक्त किया गया। पुराने उपमानों को नया आयाम एवं अर्थ प्रदान किया गया। मानव जीवन की विभिन्न घटनाओं, परिवेश और गतिविधियों को कविता में स्थान दिया जाने लगा। प्रकृति में होने वाले विभिन्न सूक्ष्म परिवर्तनों को भी मानवीय गतिविधियों से जोड़ा जाने लगा।

व्याख्यानात्मक प्रश्नोत्तर -

1. 'नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।'
उपर्युक्त पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या करो।

उत्तर- 'नील जल में .... रही हो'

(1) संदर्भ - उपर्युक्त काव्यांश पंक्तियाँ हिन्दी की आधार पाठ्यपुस्तक आरोह के अध्याय छह की कविता 'उषा' से अवतरित है जिसके कवि शमशेर बहादुरसिंह है।

(2) प्रसंग - कविता की इन पंक्तियों में सूर्योदय से पूर्व प्रकृति में होने वाले विभिन्न दृश्य-परिवर्तनों एवं उनके सौंदर्य का चित्रण किया गया है।

(3) व्याख्या - उपर्युक्त काव्यांश में कवि कहना चाहता है कि सूर्योदय के पूर्व के दृश्य अत्यंत सुंदर एवं मनोरम होते है। सूर्योदय से पूर्व जब सूर्य की किरणें नीले आकाश पर पड़ती है तो ऐसा लगता है जैसे झील के नीले पानी में किसी सुंदरी का गोरा - चमकीला शरीर झिलमिलाता हुआ, हिलता हुआ, चमकता हुआ दिखाई दे रहा है। इस प्रकार का दृश्य मनोरम सौंदर्य पैदा करता है आकाश की ओर चढ़ते सूर्य की जल में पड़ती किरणें हिलती हुई प्रतीत होती है और ऐसा लगता है जैसे कोई सुंदरी जल में स्नान कर रही हो।

(4) विशेष - 1. काव्य पंक्तियों की भाषा सरल है।
2. पंक्तियों में उत्प्रेक्षा एवं मानवीकरण अलंकार है।
3. काव्य पंक्तियों में श्रृंगार रस है।

शेखावाटी मिशन - 100

अध्याय - 9
फिराक गोरखपुरी (रूबाइयाँ, गजल)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर -

1. **फिराक की रूबाइयों में हिंदी का एक घरेलू रूप दिखता है। फिराक की रूबाइयों में भाषा का यह रूप हिंदी के किस कवि की समानता रखता है?**

   (1) कबीर (2) रहीम (3) बिहारी (4) सूरदास (4)

2. **'चाँद का टुकड़ा' वाक्य किसके लिए आया है?**

   (1) माँ के लिए (2) पुत्र के लिए (3) भाई के लिए (4) बहन के लिए (2)

3. **'वो रूपवती मुखड़े पै इक नर्म दमक' यह पद्यांश किसके लिए आत्मा है?**

   (1) माँ के लिए (2) बच्चे के लिए (3) घर के लिए (4) बहन के लिए (1)

4. **'देख आईने में चाँद उतर आया है' पंक्ति में माँ बच्चे को आइने में किसका प्रतिबिंब दिखाती है?**

   (1) चाँद का (2) बालक का (3) माँ का (4) चाँद और बालक का (1)

5. **माँ बच्चे को आईने में चाँद का प्रतिबिंब दिखाती है, क्योंकि ....**

   (1) बच्चा चाँद लेने की जिद करता है। (2) बच्चा खिलौना लेने की जिद करता है।

   (3) बच्चा आईना लेने की जिद करता है। (4) बच्चा स्वयं को आईने में देखना चाहता है। (1)

एक पंक्ति/शब्दों के प्रश्नोत्तर -

1. **फ़िराक गोरखपुरी का मूल नाम क्या है?**

उत्तर- रघुपति सहाय 'फिराक'।

2. **फ़िराक गोरखपुरी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?**

उत्तर- 28 अगस्त, 1896 ई. को गोरखपुर (उ.प्र.) में।

3. **फिराक गोरखपुरी ने उर्दू शायरी की किस परंपरा को तोड़ा था?**

उत्तर- उर्दू शायरी में लोकजीवन और प्रकृति के पक्ष बहुत ही कम मिलते हैं। फिराक गोरखपुरी ने इस परंपरा को तोड़ा और अपनी शायरियों में लोक जीवन और प्रकृति चित्रण को स्थान दिया।

4. **'प्रकृति, मौसम और भौतिक जगत् के सौंदर्य को शायरी का विषय बनाते हुए यह वाक्य कि 'दिव्यता भौतिकता से पृथक वस्तु नहीं है। जिसे हम भौतिक कहते है वही दिव्य भी है।' उपर्युक्त वाक्य किसने कहे है?**

उत्तर- फिराक गोरखपुरी ने।

5. **फिराक की रूबाईयों में भाषा के किस रूप का अनूठा गठबंधन दिखाई देता है?**

उत्तर- लोकभाषा का।

6. **'रूबाई' क्या है?**

उत्तर- 'रूबाई' उर्दू और फारसी का एक छंद या लेखन शैली है, जिसमें चार पंक्तियाँ होती है। इसकी पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति में तुक (काफ़िया) मिलाया जाता है तथा तीसरी पंक्ति स्वच्छंद होती है।

शेखावाटी मिशन - 100

7. 'मेरा परदा खोले है या अपना परदा खोले है' पंक्ति में कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर– कवि कहना चाहता है कि जो लोग दूसरों की बुराई करते हैं, या दूसरों में कमियाँ निकालते है वे वास्तव में दूसरों का अहित न करके स्वयं के असली रूप या स्वयं के बुरे विचारों को प्रकट कर रहे होते हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर –

1. 'आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी हाथों पे झुलाती है।' उपर्युक्त पंक्ति से कवि का क्या आशय है?

उत्तर– उपर्युक्त पंक्ति में कवि फिराक गोरखपुरी माता का अपने बच्चों के प्रति संयोग वात्सल्य का सजीव चित्रण करते हैं। बच्चे को चाँद के टुकड़े की उपमा देकर वात्सल्य को और अधिक बढ़ा दिया है। वह बच्चे को आँगन में खड़ी अपने हाथों पर झुला रही है। ऐसा लगता है कि आकाश का चाँद उसके आँगन में उतर आया हो। काव्य पंक्तियों में वात्सल्य रस का सुंदर चित्रण हुआ है।

2. 'किस्मत हमको रो लेवे है, हम किस्मत को रो लेवे है।' पंक्ति का भावार्थ स्पष्ट करो।

उत्तर– उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में कवि ने अपनी किस्मत का दुर्भाग्यपूर्ण चित्रण किया है। कवि कह रहा है कि उसका भाग्य साथ नहीं दे रहा है, इसलिए कवि को अपने दुर्भाग्य पर रोना आता है। कवि अपने दुर्भाग्य पर सहानुभूतिपूर्ण आँसू बहा रहा है।

3. फिराक गोरखपुरी की रूबाई और गजलों की शैलीगत विशेषताए लिखो।

उत्तर– फिराक गोरखपुरी ने अपनी रूबाई और गजलों में हिंदी, उर्दू और लोकभाषा के अनूठे गठबंधन को पिरोया है। अपनी गजलों और रूबाईयों में सामान्य ग्रामीण बोलचाल की शब्दावली का प्रयोग किया है। गोरखपुरी की भाषा में संवेदना और ठसक का मिला–जुला स्वरूप दिखाई देता है। साथ ही उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा और मानवीकरण जैसा अलंकारों का प्रयोग भी अपनी गजलों और रूबाईयों में किया है। परंपरागत भावबोध और शब्द भंडार का उपयोग करते हुए नवीन भाषा में नवीन विषयों को जोड़ा है। हिंदी और उर्दू का मिला–जुला स्वरूप फिराक की रचनाओं में मिलता है।

4. 'उसको उतना ही पातें है खुद को जितना खोले है।' पंक्ति से कवि का क्या आशय है?

उत्तर– कवि फिराक ने उपर्युक्त काव्य पंक्ति में 'उसको' शब्द कई अर्थों में लिया है। 'उसको' शब्द एक अर्थ में तो अपने प्रिय के प्रति बेतहाशा प्रेम को दर्शाता है। कवि कहता है कि स्वयं को खोकर और समर्पित करके ही हम प्रिय के प्रेम को प्राप्त कर सकते है। दूसरी तरफ कवि मनुष्य के आगे बढ़ने और लक्ष्य प्राप्त करने की ओर भी संकेत करता है। वह कहता है कि लक्ष्य भी उतना ही जल्दी प्राप्त होता है जितना आप लक्ष्य के प्रति त्याग और समर्पण की भावना रखते है।

5. 'शब में सन्नाटे कुछ बोले है' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर– 'शब में सन्नाटे कुछ बोले हैं' यह कहकर कवि ने प्रकृति के जड़ पदार्थों को भी चेतन स्वरूप बना दिया है। कवि कहता है कि रात में अँधेरे की खामोशी भी मनुष्य को कुछ संदेश देती है। हमें इसको भी सुनने और समझने का प्रयास करना चाहिए। प्रकृति का प्रत्येक जड़ पदार्थ भी हमारे लिए प्रेरणास्पद हो सकता है यदि हम उसकी तरफ ध्यान दे तो। कवि फिराक का कहने का उद्देश्य यह है कि हमें जड़ पदार्थो को भी उतना ही महत्त्व देना चाहिए जितना हम चेतना पदार्थों को देते हैं।

शेखावाटी मिशन – 100

व्याख्यात्मक प्रश्नोत्तर -

1. **रक्षाबंधन की सुबह रस की पुतली**
छायी है घटा गगन की हलकी-हलकी
बिजली की तरफ चमक रहे है लच्छे
भाई के हैं बाँधती चमकती राखी।
उपर्युक्त काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या करो।

उत्तर- 'रक्षाबंधन की सुबह .... चमकती राखी।'

(1) संदर्भ – उपर्युक्त पद्यांश आधार हिन्दी पाठ्य पुस्तक के अध्याय– नौ फिराक गोरखपुरी की रूबाई के अंतिम भाग से लिया गया है।

(2) प्रसंग – उपर्युक्त पद्यांश में सांस्कृतिक चित्रण करते हुए भाई–बहिन के उमंग और प्रसन्नता के त्योहार रक्षाबंधन का चित्रण किया है।

(3) व्याख्या – फिराक गोरखपुरी अपनी इस रूबाई के अंश में भारतीय सांस्कृतिक विरासत भाई–बहिन के पवित्र त्योहार रक्षाबंधन का चित्रण करते हुए रक्षाबंधन के त्योहार को प्रकृति से जोड़ते हुए कह रहे हैं कि सुबह से ही हल्की–हल्की बरसात हो रही है और रस की पुतली अर्थात् छोटी बहन जिसकी बातें बड़ी ही रसभरी है। बहन बिजली की चमक जैसी राखी अपने भाई के बाँधती है। ऐसा लगता है जैसे बहन ने भाई की कलाई पर बिजली के संपूर्ण उजाले को बाँध दिया हो, वह प्रकाश जो भाई–बहन के प्यार को अनंत काल तक प्रकाशित करेगा।

(4) विशेष –
1. पद्यांश की भाषा सरल एवं सहज है।
2. उपमा एवं मानवीकरण अलंकार का प्रयोग हुआ है।
3. पद्यांश में सांस्कृतिक चित्रण है।

शेखावाटी मिशन – 100

हिन्दी अनिवार्य

कक्षा -12

आरोह (गद्य - खंड)

अध्याय - 11
भक्तिन (महादेवी वर्मा)

लघुत्तरात्मक प्रश्न -

1. 'मेरे भ्रमण की एकांत साथिन भक्तिन ही रही है।' महादेवी वर्मा के इस कथन का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- लेखिका जब भी किसी स्थान की यात्रा करने के लिए निकलती थी तो भक्तिन उसके साथ हो जाती। किसी धार्मिक स्थल जैसे बदरी-केदार की यात्रा में ऊँचे - नीचे दुर्गम रास्तों में भी लेखिका की पथप्रदर्शक बनकर चलती। गाँवों में धूल भरे मार्गों पर लेखिका के साथ छाया बनकर चलती रहती थी। इसलिए भक्तिन लेखिका की एकान्त की साथिन बनकर रही।

2. भक्तिन का दुर्भाग्य उसके लिए किस प्रकार चुनौती बन गया था?

उत्तर- भक्तिन के पति की असामाजिक मृत्यु तथा कुछ समय पश्चात उसके दामाद की मृत्यु ने भक्तिन को भीतर तक झकझौर दिया था। कुछ निर्णय ग्राम की पंचायत ने उसकी आशा के विरूद्ध कर दिया। जमीदार का लगान समय पर नहीं चुका पाने कारण उसे अपमान का सामना करना पड़ा। इन समस्त कारणों से भक्ति का दुर्भाग्य उसके सामने चुनौती बन गया था।

3. भक्तिन की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- भक्तिन की मुख्य चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार से है -

1. स्वाभिमानी, कर्मठ व कर्तव्यपरायण नारी के गुण थे।
2. पति की असामयिक मृत्यु के बाद भी परिस्थितियों का सामना करती रही।
3. धार्मिक आस्था के साथ अन्धविश्वासों में भी यकीन था।
4. सेवक-धर्म का पूर्ण वफादारी से पालन किया।

4. 'तब मैने समझ लिया कि इस सेवक का साथ टेढ़ी खीर है।' लेकिन ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर- महादेवी वर्मा के जीवन में जैसे ही भक्तिन का प्रवेश हुआ उसके अगले ही दिन भक्तिन ने स्नान करके धुती हुई धोती के जल के छींटों से पवित्र करके पहना। पीपल वृक्ष को जलाभिषेक करके नाक दबाकर दो मिनट का जप किया। रसोई में कोयले की मोटी रेखा खींचकर छूआछूत की प्रवृति दिखाई तो लेखिका ने समझ लिया था कि इस सेवक का साथ टेढ़ी खीर है।

5. महादेवी वर्मा का जीवन परिचय स्पष्ट करते हुए उनका साहित्यिक लेखन में योगदान को प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर- महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में फरूखाबाद (उ. प्रदेश) में हुआ। साहित्य सेवा और समाज सेवी दोनों रूपों में महादेवी वर्मा की प्रतिष्ठा रही है। महात्मा गांधी की दिखाई राह पर अपना जीवन समर्पित कर उन्होने शिक्षा और समाज कल्याण के क्षेत्र में निरंतर कार्य किया। नारी-समाज में शिक्षा प्रसार के उद्‌देश्य से उन्होंने प्रयोग महिला विद्यापीठ की स्थापना की। साहित्य जगत के क्षेत्र में अपनी बहुमुखी प्रतिभा को दिखाते हुए इनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाएँ है **जैसे** -

शेखावाटी मिशन - 100

1. दीपशिखा 2. यामा 3. शृंखला की कड़ियाँ 4. अतीत के चलचित्र 5. मेरा परिवार

भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित इस प्रतिभा का सन् 1987 में इलाहाबाद में निधन हो गया।

निबंधात्मक प्रश्न–

1. महावेदी वर्मा ने 'भक्तिन' संस्मरणात्मक रेखाचित्र का मुख्य भावार्थ स्पष्ट दीजिए।

उत्तर– महादेवी वर्मा द्वारा रचित इस रचना में भक्तिन के अतीत और वर्तमान का परिचय देते हुए उसके व्यक्तित्व का बहुत दिलचस्प खाका प्रस्तुत किया गया है। महादेवी के जीवन में प्रवेश से पहले उसके कैसे एक संघर्षशील, स्वाभिमानी और कर्मठ जीवन जिया कैसे पितृसत्तात्मक–मान्यताओं और छल–छद्‌म भरे समाज में अपने और अपनी बेटियों के हक की लड़ाई लड़ती रही और उसमें पराजित होकर कैसे जिंदगी की राह पूरी तरह बदल लेने के निर्णय तक पहुँची। इन सब घटनाओं का अत्यंत संवेदनशील चित्रण इस रचना में हुआ है। महादेवी जी के जीवन में भक्तिन एक ऐसी परिस्थिति के रूप में दिखाई देती है जिसके कारण लेखिका के व्यक्तित्व के कई अनछुए आयाम उद्‌घाटित होते है। इसी कारण लेखिका व्यक्तित्व का जरूरी अंश मानकर वे भक्तिन को खोना नहीं चाहती। महादेवी के प्रति अनमोल आत्मीयता से भरी भक्तिन के बहाने स्त्री अस्मिता की संघर्षपूर्ण आवाज को इस रचना में प्रस्तुत किया गया।

शेखावाटी मिशन – 100

अध्याय – 12
बाजार दर्शन (जैनेन्द्र कुमार)

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भगत जी पर बाजार के जादू का प्रभाव क्यों नहीं पड़ता था?

उत्तर- भगत जी चूरन बनाने की सामग्री जब बाजार से लाने जाते थे तो वे सीधे ही एक पंसारी की दुकान पर पहुँच जाते हैं वहाँ से जरूरत के अनुसार काला नमक व जीरा खरीदने के बाद चौक के बाजार का आकर्षण उनको अपनी तरफ आकर्षित नहीं करता था। इससे यह स्पष्ट है कि भगत जी अपने मन पर नियंत्रण रखते हुए बाजार से अपने उद्देश्य को पूरा करते हैं।

2. 'बाजार दर्शन' निबंध का मूल भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- बाजार दर्शन निबंध में गहरी वैचारिकता और साहित्य सुलभ लालित्य का दुर्लभ संयोग देखा जा सकता है। निबंध में यह स्पष्ट किया गया है कि बाजार की जादुई ताकत कैसे हमें अपना गुलाम बना लेती है। अगर हम अपनी आवश्यकताओं को ठीक-ठीक समझकर बाजार का उपयोग करें, तो उसका लाभ उठा सकते है। लेकिन अगर हम जरूरत को तय कर बाजार में जाने के बजाय उसकी चमक-दमक में फँस गए तो वह असंतोष तृष्णा और ईर्ष्या से घायल कर हमें सदा के बेकार बना सकता है।

3. पैसे की व्यंग्य-शक्ति के बारे में लेखक के क्या विचार है?

उत्तर- पैसे की व्यंग्य-शक्ति को लेखक ने मन में ईर्ष्या व प्रतिस्पर्द्धा बढ़ाने वाली बताया है। पैसे की अधिकता होने के कारण मनुष्य अपने आपको श्रेष्ठ मानकर बाजार से अनावश्यक वस्तुओं को क्रय करता है जिससे बाजार का बाजारूपन बढ़ता है। लोग अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति-शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाजार को देते हैं।

4. जैनेन्द्र कुमार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- हिन्दी में प्रेमचंद के बाद सबसे महत्वपूर्ण कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित जैनेन्द्र कुमार का जन्म सन् 1905 में अलीगढ़ (उ.प्रदेश) में जन्म हुआ। अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से उन्होंने हिंदी में एक सशक्त मनोवैज्ञानिक कथा-धारा का प्रवर्तन किया। परख, सुनिता और त्यागपत्र रचनाओं ने इनको मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठा दिलाई। कथाकार होने के साथ-साथ जैनेन्द्र की पहचान अत्यंत गंभीर चिंतक के रूप में रही।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. बाजार के जादू से किस प्रकार बचा जा सकता है? 'बाजार दर्शन' निबंध के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- बाजार दर्शन निबंध में लेखक बताया है कि बाजार के जादू से बचने का सीधा उपाय यह है कि जब भी बाजार जाओ तो मन खाली मत रखो। मन खाली हो तब बाजार न जाओ। कहते है लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए। पानी भीतर हो, लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है। मन लक्ष्य में भरा हो तो बाजार भी फैला का फैला ही रह जाता है। तब वह घाव बिलकुल नहीं दे सकेगा बल्कि आनंद ही देगा। तब बाजार तुमसे कृतार्थ होगा, क्योंकि तुम कुछ न कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे। बाजार की असली कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना। इसलिए लेखक ने मन को लक्ष्य से भरा, सन्तुष्टि व प्रसन्नता से भरा होने पर जोर दिया है।

शेखावाटी मिशन – 100

व्याख्यात्मक प्रश्न –

1. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उत्तर– बाजार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है और जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते है, अपनी पर्चेजिंग पावर के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति–शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाजार को देते हैं। न तो वे बाजार से लाभ उठा सकते है, न उस बाजार को सच्चा लाभ दे सकते है। वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। जिसका मतलब है कि कपट बढ़ाते है।

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यांश जैनेन्द्र कुमार रचित निबंध 'बाजार दर्शन' ने लिया गया है। इसमें लेखक ने ऐसे व्यक्तियों पर व्यंग्य किया है जो धन का अनावश्यक उपयोग करके बाजार में कपट को बढ़ाते हैं।

व्याख्या – लेखक कहते है कि बाजार का सार्थक उपयोग वही व्यक्ति करता है जो यह जानता है कि वह क्या चाहता है? उसे क्या खरीदना है व किस तरह पैसे का उपयोग करना है। लेकिन जो यह नहीं जानते है वे अपने पैसे के अभिमान से बाजार को बाजारूपन अर्थात् व्यवहार का हल्कापन बढ़ाते है। इस प्रकार के बढ़ते कपट के कारण सद्‌भावों में कमी आने लगती है। फलस्वरूप ऐसे बाजार से हम किसी तरह का लाभ भी प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

विशेष – 1. लेखक ने व्यंग्यात्मक भाषा शैली का प्रयोग किया है।

2. पैसे का अनुचित उपयोग होने से उसके परिणामों को दिखाया गया है।

शेखावाटी मिशन – 100

अध्याय – 13
काले मेघा पानी दे (धर्मवीर भारती)

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. जीजी के प्रेम के कारण लेखक के समक्ष कौन-कौनसी चुनौतियाँ आई?

उत्तर- लेखक इन्द्र सेना के आचरण व धार्मिक परम्पराओं के अंधविश्वास में बिलकुल भी रूचि न होते हुए भी अपनी जीजी के प्रेम कारण मजबूरी में सारे काम करने पड़ते है। लेखक इन अंधविश्वासों को जड़ से उखाड़ फैंकना चाहता है पर मुश्किल थी कि जीजी का कोई पूजा-विधान, त्योहार, अनुष्ठान उसके बिना पूरा नहीं था।

2. जीजी ने इन्द्रसेना पर पानी फैंकने को किन तर्को के आधार पर उचित ठहराता है?

उत्तर- जीजी लेखक को बताती है कि देवता से कुछ माँगने से पहले उसे कुछ चढ़ाना पड़ता है। किसान भी तीस-चालीस मन गेहूँ पाने के लिए पाँच-छह सेर गेहूँ की बुवाई करता है। हम मेढ़क मंडली पर पानी नहीं डालेंगे तो इन्द्र भगवान हमें पानी कैसे देंगे? जीजी लेखक से कहती है तू इसे पानी की बरबादी समझता है पर यह बर्बाद नहीं है। यह पानी का अर्ध्य चढ़ाना है।

3. 'गगरी फूटी की फूटी रह जाती है, बैल पियासे के पियासे रह जाते है।' काले मेघा पानी दे पाठ के आधार पर कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- धर्मवीर भारती के संस्मरण 'काले मेघा पानी दे' में एक प्रतीकात्मक कथन है जिसमें देश के भ्रष्टाचार की स्थिति को उजागर किया गया है। जनता के हितार्थ बनने वाली विभिन्न योजनाओं रूपी गगरी में छेद हो गए है जिससे उनका लाभ आम जनता को नहीं मिलता है। अत: इस कथन में समकालीन भ्रष्टाचार की स्थिति का वर्णन हुआ है।

4. धर्मवीर भारती का साहित्यिक परिचय दीजिए।

उत्तर- सन् 1927 में इलाहाबाद (उ.प्र.) में जन्मे धर्मवीर भारतीय का आजादी के बाद के साहित्यकारों में विशिष्ट स्थान है। भारतीजी के लेखन की एक खासियत यह भी हे कि हर उम्र और हर वर्ग के पाठकों के बीच उनकी अलग-अलग रचनाएँ लोकप्रिय है। वे मूल रूप से व्यक्ति स्वातंत्र्य, मानवीय संकट एवं रोमानी चेतना के रचनाकार है। इनकी रचनाएं इस प्रकार से है –

1. बंद गली का आखिरी मकान (कहानी)
2. गुनाहों का देवता (उपन्यास)
3. ठेले पर हिमालय (निबंध)
4. ठंडा लोहा (काव्य-संग्रह)

निबंधात्मक प्रश्न –

1. 'काले मेघा पानी दे' संस्मरण का मूल अर्थ बतलाईए -

उत्तर- प्रस्तुत संस्मरण में लोक-प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वन्द्व का सुंदर चित्रण हुआ है। विज्ञान का अपना तर्क है और विश्वास का अपना सामर्थ्य। इसमें कौन कितना सार्थक है, यह प्रश्न पढ़े-लिखे समाज को उद्वेलित करता है। इसी दुविधा को लेकर लेखक ने पानी के संदर्भ में प्रसंग रचा है। आषाढ़ का पहला परववाड़ा बीत जाने के बाद खेती और बहुकाज प्रयोग के लिए पानी न हो तो जीवन चुनौतियों का घर बन जाता है और उन चुनौतियों का निराकरण विज्ञान न कर पाए तो उत्सवधर्मी भारतीय समाज चुप नहीं बैठता। वह किसी जुगाड़ में लग जाता है, प्रपंच रचता है और हर कीमत प जीवित रहने के लिए अशिक्षा और बेबसी के भीतर से उपाय और काट की खोज करता है।

शेखावाटी मिशन – 100

व्याख्यात्मक प्रश्न -

1. **निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।**

उत्तर- देश की कितनी क्षति होती है इस तरह से अंधविश्वासों से। कौन कहता है उन्हें इन्द्र की सेना? अगर इन्द्र महाराज से ये पानी दिलवा सकते है, तो खुद अपने लिए पानी क्यों नहीं माँग लेते? क्यों मुहल्ले भर का पानी नष्ट करवाते घूमते है नहीं यह सब पाखण्ड है। अंधविश्वास है। ऐसे ही अन्धविश्वासों के कारण हम अंग्रेजों की पिछड़ गए और गुलाम बन गए।

प्रसंग - प्रस्तुत गद्यांश लेखक धर्मवीर भारती के संस्मरण 'काले मेघा पानी दे' से रचित है इसमें लेखक अंधविश्वास के नाम पर पानी की बर्बादी के लिए व्यंग्य किया है।

व्याख्या - लेखक धर्म के नाम पर व्याप्त अंधविश्वासों पर व्यंग्य करते हुए इनसे होने वाले नुकसानों को दिखलाया है। इन्द्र से पानी दिलवाने के नाम पर पानी माँगने वाली इस इन्द्र सेना के बारे में लेखक कहते है कि ये लोगो से पानी माँगने के बजाय इन्द्र भगवान से सीधे ही पानी क्यों नहीं माँगते। लेखक का आशय दान के प्रकार एवं उसके महत्त्व को इस प्रकार समझाना रहा है कि मनुष्य के पास कम होते हुए भी अपने स्वार्थ को पीछे छोड़ दूसरों के लिए किया गया कार्य ही परमार्थ होता है। इन अंधविश्वासों का कारण ही रहा जो हमें अंग्रेजों का गुलाम बनाकर छोड़ दिया।

विशेष - 1. गद्यांश की भाषा सरल व सारगर्भित है।

2. अंधविश्वासों का अनुसरण भारतीयों के पिछड़ने का कारण बताया गया है।

शेखावाटी मिशन - 100

अध्याय - 14
पहलवान की ढ़ोलक (फणीश्वर नाथ रेणु)

लघूत्तरात्मक प्रश्न -

1. लुट्टन पहलवान को राज दरबार का दर्शनीय जीव क्यों कहा गया?

उत्तर- लुट्टन पहलवान इधर-उधर घूमता या दरबार में जब भी उच्च स्वर में गर्जना करता तो लोग समझ लेते थे कि राजदरबार का शेर दहाड़ रहा है। लुट्टन यो ही 15 वर्ष बीत गए। पहलवान अजेय ही रहा जिसकी कीर्ति आस-पास के इलाकों में फैली रही इन्हें कारणों से लुट्टन पहलवान को राजदबार का दर्शनीय जीव बताया गया है।

2. ढ़ोलक की आवाज सम्पूर्ण ग्राम में संजीवनी का कार्य करती थी। कैसे?

उत्तर- ग्राम में मलेरिया व हैजे की बीमारी फैलने से वातावरण निराशा-वेदना से भरा हुआ। रात के समय गाँव का वातावरण भय से युक्त था। महामारी से पीड़ित लोगों को ढोलक की ध्वनि से संघर्ष करने की शक्ति एवं उत्तेजना मिलती थी। इस प्रकार ढोलक की आवाज का पूरे ग्राम पर संघर्ष से जूझने की भावना का प्रेरणादायी असर होता था।

3. 'पहलवान को साफ जवाब मिल गया कि राज-दरबार में उसकी आवश्यकता नहीं' क्यों?

उत्तर- वृद्ध राजा की मृत्यु के बाद नए राजकुमार ने शासन अपने हाथ में ले लिया। राजकुमार ने जब पहलवान और उसके पुत्रों का दैनिक भोजन व्यय सुना तो उसे अनावश्यक बताया राजदरबार में अब दंगल का स्थान घोड़े की रेस ने ले लिया अत: पहलवान को साफ जवाब मिल गया कि राजदरबार में उसकी आवश्यकता नहीं है।

4. फणीश्वरनाथ रेणु ने व्यक्तित्व व कृतित्व का परिचय प्रस्तुत कीजिए-

उत्तर- हिन्दी साहित्य में आंचलिक उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठित कथाकार फणीश्वर नाथ रेणु का जन्म 1921 ई. में पूर्णिया (बिहार) में हुआ। फणीश्वर नाथ रेणु का जीवन उतार-चढ़ावों एवं संघर्षो से भरा हुआ था। साहित्य के अलावा विभिन्न राजनैतिक एवं सामाजिक आंदोलनों में भी उन्होंने सक्रिय भागीदारी की। हिन्दी जगत में आंचलिक उपन्यासों पर विमर्श रचना 'मैला आँचल' से ही प्रारम्भ हुआ। फणीश्वरनाथ रेणु की कुछ प्रसिद्ध रचनाएँ इस प्रकार से है -

1. कितने चौराहे (उपन्यास)
2. आदिम रात्रि की महक (कहानी)
3. वनतुलसी की गंध (संस्मरण)

निबंधात्मक प्रश्न -

1. 'पहलवान की ढोलक' रचना में लेखक ने किन उद्‌देश्यों को स्पष्ट किया है?

उत्तर- फणीश्वर नाथ रेणु की यह कहानी व्यवस्था के बदलने के साथ लोक-कला और इसके कलाकार के अप्रसांगिक हो जाने की कहानी है। राजा साहब की जगह नए राजकुमार का आ जाना सिर्फ व्यक्तिगत सत्ता परिवर्तन नहीं बल्कि जमीनी पुरानी व्यवस्था के पूरी तरह उलट जाने और उस पर सभ्यता के नाम पर एकदम नयी व्यवस्था के आरोपित हो जाने का प्रतीक है। पहलवान जीवट ढोल के बोल में अपने आपको न सिर्फ जिन्दा रखता है बल्कि भूख व महामारी से दम तोड़ रहे गाँव को मौत से लड़ने की ताकत भी देते रहता है। मनुष्यता की साधना और जीवन सौंदर्य के लिए लोक कलाओं को प्रासंगिक बनाए रखने हेतु हमारी क्या भूमिका होनी चाहिए? यह हमारे समक्ष एक प्रश्न है।

शेखावाटी मिशन - 100

व्याख्यात्मक प्रश्न –

1. **निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।**

उत्तर– विजयी लुट्टन कूदता–फाँदता, ताल ठोकता सबसे पहले बाजे वालों की ओर दौड़ा और ढ़ोलों को श्रद्धापूर्वक प्रमाण किया। फिर दौड़कर उसने राजा साहब को गोद में उठा लिया। राजा साहब के कीमती कपड़े मिट्टी में सन गए। मैनेजर साहब ने आपति की किन्तु राजा साहब ने स्वयं उसे छाती से लगाकर गद्गद् होकर कहा–जीते रहो, बहादुर तुमने मिट्टी की लाज रख ली।

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यावतरण लेखक फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा रचित कहानी पहलवान की ढोलक से लिया गया है। इसमें लुट्टन पहलवान की जीत की खुशी का वर्णन किया गया है।

व्याख्या – मेले की कुश्ती प्रतियोगिता में जैसे ही लुट्टन पहलवान को विजयी घोषित किया जाता है विजयी की उमंग तरंगों के साथ लुइन कूदता–फाँदता जोर की आवाजें निकालता हुआ सबसे पहले ढ़ोलों को प्रमाण करता है। इसके बाद खुशी से उत्साहित राजा साहब को पहलवान ने गोद में उठा लेता है। राजा के कीमती कपड़े मिट्टी से सन् जाते है। राजा साहब स्वयं प्रसन्न होकर पहलवान को गले लगा लिया और उसे धन्यवाद देते हुए कहा कि तुम बहादुर हो तुमने गाँव की मिट्टी की मर्यादा रख ली।

विशेष – 1. भाषा सरल–सहज व बोधगम्य है।

2. कुश्ती में जीत से पहलवान और राजा साहब की खुशी का वर्णन है।

शेखावाटी मिशन – 100

अध्याय - 16
नमक (रजिया सज्जाद जहीर)

लघूत्तरात्मक प्रश्न -

1. 'नमक' कहानी में भारत व पाक की जनता के आरोपित भेदभावों के बीच मुहब्बत का नमकीन स्वाद घुला हुआ है। कैसे?

उत्तर- नमक कहानी के पात्र सफिया भारत की व उसका भाई पाकिस्थान का नागरिक है। लेकिन भाई-बहिन का प्रेम खत्म नहीं हो जाता है। इसी प्रकार सफिया में पाकिस्थानी कस्टम अधिकारी, भारतीय कस्टम अधिकारी सुनिलदास में व्यवहारगत जो प्रेम-भाव दिखाया गया है, उससे स्पष्ट होता है कि भारत-पाक विभाजन होने पर भी दोनों देशों की जनता में प्रेम मुहब्बत का नमकीन स्वाद आज भी मौजूद है।

2. सफिया ने नमक की पुड़िया टोकरी से निकालकर अपने हैंडबैग में क्यों रखी?

उत्तर- जब सफिया के सामान की जाँच हेतु वेटिंग रूप से बाहर निकाला जा रहा था तो सफिया ने सोचा कि इस प्रेम के तोहफे को चोरी-छिपे ले जाना ठीक नहीं है। वह इसे कस्टम वाले अधिकारियों को दिखाकर ही अपने साथ ले जायेगी। इसी वजह से सफिया ने नमक की पुड़िया फलों की टोकरी से निकाल कर हैण्डबैग में रखी।

3. 'आखिर कस्टम वाले भी इंसान होते हैं, कोई मशीन तो नहीं होते।' यह कथन किसने, किससे और क्यों कहा?

उत्तर- यह कथन सफिया ने अपने भाई से कहा। सफिया को उसके भाई ने पाकिस्थान से नमक ले जाना गैर कानूनी बताया। सफिया ने कहा कि वह इन्हें दिखाकर ले जायेगी। कस्टम वाले भी तो मुहब्बत और आदमियत वाले इंसान होते है। वे प्रेम से इस उपहार को ले जाने से मना नहीं करेंगे।

4. नमक कहानी की मुख्य पात्र 'सफिया' के चरित्र का चित्रण कीजिए।

उत्तर- सफिया के चरित्र की मुख्य विशेषताएँ -

1. वादे को निभाने वाली महिला।
2. सफिया नमक की पुड़िया को चोरी से ले जाना अपने स्वभाव के विरूद्ध मानती है।
3. सफिया का मानवीय रिश्तों में गहरा विश्वास है।
4. सफिया चतुर एवं मानवीय संवेदनाओं का पूरा आदर करती है।

निबंधात्मक प्रश्न -

1. 'नमक' कहानी का मुख्य सारांश प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर- नमक शीर्षक कहानी भारत-पाक विभाजन के बाद सरहद के दोनों परफ के विस्थापित पुनर्वासित जनों के दिलों को टटोलती एक मार्मिक कहानी है। दिलों को टटोलने की इस कोशिश में अपने पराए, देस-परदेस की कई प्रचलित धारणाओं पर सवाल खड़े किए गए है। विस्थापित होकर देस-परदेस की आई सिख बीबी आज भी लाहौर को अपना वतन मानती है और सौगात के तौर पर वहाँ का नमक लाए जाने की फरमाइश करती है। कस्टम अधिकारी नमक ले जाने की इजाजत देते हुए देहली को अपना वतन बताता है। राष्ट्र राज्यों की नयी सीमा रेखाएँ खींची जा चुकी है लेकिन जमीन पर खींची गई रेखाएँ उनके अंतर्मन तक नहीं पहुँच पाई है।

शेखावाटी मिशन - 100

व्याख्यात्मक प्रश्न –

1. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

उत्तर– जब उसका सामान कस्टम पर जाँच के लिए बाहर निकाला जाने लगा तो उसे एक झिरझिरी–सी आई और एकदम से उसने फैसला किया कि मुहब्बत का यह तोहफा चोरी से नहीं जाएगा, नमक कस्टमवालों को दिखाएगी वह। उसने जल्दी से पुड़िया निकाली और हैंडबैग में रख ली जिसमें उसका पैसों का पर्स और पासपोर्ट आदि थे। जब सामान कस्टम से होकर रेल की तरफ चला तो वह एक कस्टम अफसर की तरफ बढ़ी।

प्रसंग – यह गद्यांश लेखिका रजिया सज्जाद जहीर द्वारा लिखित 'नमक' कहानी से लिया गया है इसमें पाकिस्तान से हिन्दुस्तान लौटते समय सफिया के सामान की जाँच का वर्णन किया गया है।

व्याख्या – कस्टम अधिकारियों द्वारा जब सफिया के सामान की जाँच होने वाली थी उसी समय सफिया के शरीर में एक अजीबसी संवेदना पैदा होती है तथा वह तुरन्त फैसला बदलती है व निर्णय करती है कि यह प्रेम का उपहार चोरी से नहीं लेकर जाऊँगी। नमक की पुड़िया कस्टम वालों को दिखाने हेतु उसने पुड़िया का हैंडबैग में रख लिया। इसी तरह वह अपने सामान की जाँच हेतु एक कस्टम ऑफिसर के पास पहुँचती है।

विशेष – 1. भाषा सुगम व भावपूर्ण शैली में है।

2. सफिया की संवेदना व सत्यनिष्ठा को प्रस्तुत किया गया है।

शेखावाटी मिशन – 100

अध्याय - 17
शिरीष के फूल (हजारी प्रसाद द्विवेदी)

लघुत्तरात्मक प्रश्न -

1. **'जब - जब शिरीष की ओर देखता हूँ, तब-तब हूक उठती है।' लेखक के मन में किस तरह के भाव उठते है?**

उत्तर- लेखक कहते है कि आज भारत में भ्रष्टाचार इतने परवान पर है कि गरीब जनता अत्याचार व शोषण से त्रस्त है। लेखक इस तरह के माहौल में गाँधीजी जैसे प्रखर व्यक्तित्व से उम्मीद करता है कि शोषित-पीड़ित जनता का मार्गदर्शन कर सके, परन्तु लेखक को इस तरह का व्यक्ति नहीं देखाई देने के कारण ऐसा कहते है।

2. **काल के कोड़ों की मार से कौन बच सकता है? शिरीष के फूल निबंध के आधार पर समझाईए -**

उत्तर- समय लगातार एक गतिशील अवस्था में चलता रहता है परन्तु वे लोग जो समय के साथ अपने आपमें किसी तरह बदलाव नहीं कर पाते है तो समय उन लोगों पर कोड़े रूपी प्रहारों का प्रयोग करता है। समय के साथ गतिशील व कर्मशील लोग ही समय की मार से बच सकते है।

3. **लेखक ने कबीर को शिरीष के समान अवधूत बताकर क्या स्पष्ट करना चाहा है?**

उत्तर- कबीर मस्तमौला व फक्कड़ स्वभाव के थे। जीवन की विपरीत परिस्थितियों में भी वे सहज भाव से रहते थे। किसी प्रकार के अपमान का उनके जीवन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। वे अपनी वाणी को पूर्ण स्वतंत्र रखते थे। उनका जीवन एक अवघूत की भाँति कर्मयोग से पूर्ण था। शिरीष का वृक्ष भी चाहे कोई भी मौसम क्यों न हो उस पर किसी भी प्रकार का कोई असर नहीं होता है। इसलिए शिरीष के समान अवधूत की तुलना कबीर से हुई है।

4. **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का संक्षेप में परिचय दीजिए।**

उत्तर- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1907 बलिया (उ. प्रदेश) में हुआ था। द्विवेदी का साहित्यक कर्म भारतवर्ष के सांस्कृतिक इतिहास की रचनात्मक परिणति है। वे स्त्री को सामाजिक अन्याय का सबसे बड़ा शिकार मानते है। द्विवेदी जी का आलोचक व्यक्तित्व हिंदी - चिंताधारा की सहज लोक परम्परा को पहचान लेता है। साहित्य दर्शन तथा समाज व्यवस्था संबंधी उनकी कई मौलिक उद्भावनाएँ मूलत: निबंधों में ही मिलती है। इसके द्वारा रचित रचनाएँ इस प्रकार से है -

1. बाणभट्ट की आत्मकथा (उपन्यास)
2. अशोक के फूल (निबंध)
3. हिन्दी साहित्य का आदिकाल

निबंधात्मक प्रश्न -

1. **निबंध 'शिरीष के फूल' रचना की सार्थकता को स्पष्ट दीजिए ।**

उत्तर- लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी ने शिरीष के माध्यम से मनुष्य की अजेय जिजीविका और तुमुल कोलाहल कलह के बीच धैर्यपूर्वक, लोक के साथ चिंतारत, कर्तव्यशील बने रहने को महान मानवीय मूल्य के रूप में स्थापित करता है। ऐसी भावधारा में बहते हुए उसे देह-बल के उपर आत्मबल का महत्व सिद्ध करने वाली इतिहास विभूति गाँधीजी की याद हो जाती है तो वह गाँधीवादी मूल्यों के अभाव की पीड़ा से भी कसमसा उठता है। शिरीष के पुराने फलों की अधिकार लिप्सु खडखड़ाहट और नए पत्ते-फलों द्वारा उन्हें धकियाकर बाहर निकालने में लेखक साहित्य समाज और राजनीति में पुरानी और नई पीढ़ी के द्वन्द्व को संकेतित करता है।

शेखावाटी मिशन - 100

हिन्दी अनिवार्य
कक्षा – 12
वितान

प्रश्न.1 सिल्वर वैडिंग पाठ के लेखक का क्या नाम है?

उत्तरः- मनोहर श्याम जोशी

प्रश्न.2 सिल्वर वैडिंग कहानी के कथानायक का क्या नाम है?

उत्तरः- यशोधर पंत

प्रश्न.3 यशोधर का पूरा नाम क्या था

उत्तरः- वाई. डी. पंत

प्रश्न.4 यशेधर बाबू के विवाह की कौनसी वर्षगांठ मनाई गई ?

उत्तरः- पच्चीसवीं वर्षगांठ

प्रश्न.5 लेखक ने यशोधर बाबू को किशनदा का कौन-सा पुत्र कहा है?

उत्तरः- मानस पुत्र

प्रश्न.6 यशोधर बाबू मूलतः कहां के रहने वाले थे?

उत्तरः- कुमाऊं

प्रश्न.7 यशोधर बाबू के कितने बेटे थे?

उत्तरः- तीन

प्रश्न.8 सिल्वर वैडिंग पर भूषण ने अपने पिता को क्या उपहार दिया ?

उत्तरः- ऊनी ड्रेसिंग गाउन

प्रश्न.9 किशनदा की कौनसी छवि यशेधर बाबू के मन में बसी हुई थी?

उत्तरः- कुर्ते-पाजामे के ऊपर ऊनी-गाउन पहने, सिर पर गोल विलायती टोपी ओर पांवों में देशी खड़ाऊं तथा हाथ में एक छड़ी लिए सुबह की सैर करते किशनदा कि वह छवि वे कभी नहीं भुला सके।

प्रश्न.11 यशोधर बाबू का व्यवहार आपको कैसा लगा?

उत्तरः- यशोधर डैमोक्रेट है। अपनी पत्नी तथा बच्चों पर अपनी बातें थोपते नहीं और उनको अपनी तरह जीने देते हैं। अतः कहा जा सकता है कि उनका व्यवहार सभी के प्रति विनम्रता सम्मान एवं सहानुभूति का है।

प्रश्न.12 यशोधर बाबू दफ्तर में अपने मातहतों से कैसा व्यवहार करते हैं?

अथवा

सिल्वर वैडिंग कहानी के आधार पर सेक्शन ऑफिसर यशोधर पंत और उनके सहयोगी कर्मचारी के परस्पर संबंधों पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तरः- **यशोधर बाबू अपने मातहतों से दफ्तर में** एक दूरी बनाकर रखते थे। वे स्वयं साढ़े पांच बजे तक दफ्तर में बैठते थे। जाते समय हल्की चुटीली बात करके बाबुओं से दिनभर की कटुता को हल्का करते थे।

प्रश्न.13 सिल्वर वैडिंग कहानी में यशोधर बाबू समय के साथ ढल सकने में असफल रहते हैं। ऐसा क्यों ?

उत्तरः- वे पुरानी परम्पराओं के थे उन्हें आधुनिक पहनाव पाश्चात्य जीवन शैली तथा रहन-सहन से नफरत है इसलिए वे समय के साथ ढल सकने में असमर्थ रहते हैं।

शेखावाटी मिशन – 100

प्रश्न.14 सिल्वर वैडिंग कहानी की मूल संवेदना किसे कहा जा सकता है

उत्तरः- पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को।

प्रश्न.15 क्या पीढ़ी के अन्तराल को सिल्वर वैडिंग कहानी की मूल संवेदना कहा जा सकता है।

उत्तरः- कहानीकार ने सिल्वर वैडिंग को आधार बनाकर दो पीढ़ियों के विचार-भेद का चित्रण किया है। दोनों का यह मतभेद विभिन्न अवसरों पर प्रकट हुआ है। अतः पीढ़ी अन्तराल को कहानी की मूल संवेदना मानना उचित ही है।

प्रश्न.16 आप लोगों की देखा-देखी सेक्शन की घड़ी भी सुस्त हो गई है। यशोधर पंत जी ने किन से मिली परम्परा के तहत ऐसा कहा था?

उत्तरः- यशोधर पंत ने किशनदा से मिली हुई परम्परा का पालन करते हुए उक्त वाक्य कहा था।

प्रश्न.17 यशोधर पंत जी को असिस्टेंट ग्रेड में आए नए छोकरे चड्ढ़ा के लिए समहाउ इंप्राउड किस संदर्भ में लगता था?

उत्तरः- उसकी चौड़ी मोहरी वाली पतलून और ऊंची एडी वाले जूते के लिए।

प्रश्न.18 मेनन ने यशोधर बाबू को किस बात की बधाई दी?

उत्तरः- उनकी सिल्वर वैडिंग की।

प्रश्न.19 कौन-सी बात यशोधर बाबू की पत्नी व बच्चो को अखरती थी?

उत्तरः- उनका दफ्तर के बाद रोज-रोज मंदिर जाना और इतने ज्यादा व्रत करना ये बात उनकी पत्नी व बच्चों को बहुत अखरती थी।

प्रश्न.20 यशोधर बाबू की पत्नी का व्यवहार कैसा था ?

उत्तरः- यशोधर बाबू की पत्नी अपने मूल संस्कारों से किसी भी तरह से आधुनिक नहीं है तथापि बच्चों की तरफदारी करने की मातृ सुलभ मजबूरी ने उन्हें भी मॉड बना दिया है।

शेखावाटी मिशन - 100

अध्ययाय - 2
जूझ - डॉ आनन्द यादव

प्रश्न 1. लेखक की कक्षा के मॉनीटर का क्या नाम था?

उत्तर - बसंत पाटील

प्रश्न 2. उपन्यास के शीर्षक जूझ का क्या अर्थ है?

उत्तर - संघर्ष

प्रश्न 3. जूझ उपन्यास मूलतः किस भाषा में रचित है?

उत्तर - मराठी भाषा में

प्रश्न 4. जूझ पाठ के लेखक कौन है?

उत्तर - डॉ. आनन्द यादव

प्रश्न 5. सौंदलगेकर किस विषय का अध्यापक था?

उत्तर - मराठी भाषा का

प्रश्न 6. जूझ उपन्यास से लेखक की किस प्रकृति का उद्घाटन हुआ है?

उत्तर - संघर्षमयी प्रवृति का

प्रश्न 7. बसंत पाटिल से दोस्ती के बाद लेखक के व्यवहार में कौन-से परिवर्तन हुए?

उत्तर - लेखक की दोस्ती बसंत पाटिल से हो गई। इससे वह भी गणित में होशियार हो गया। अब दोनों मिलकर कक्षा के अन्य बालकों के सवाल जांचने लगे थे।

प्रश्न 8. अकेलापन अथवा एकान्त मनुष्य को योग्य बनाता है सिद्ध कीजिए ।

उत्तर - एकान्त में मनुष्य की एकाग्रता बढ़ जाती हे और वह अपने लक्ष्य की प्रति समर्पित हो जाता है।

प्रश्न 9. कोल्हू जल्दी शुरू करने के क्या फायदे होते है?

उत्तर - इससे शुरू की अच्छी-खासी कीमत मिल जाती थी।

प्रश्न 10. दादा के लिए क्या सम्मान की बात थी?

उत्तर - दादा के लिए देसाई का बाड़े का बुलावा सम्मान की बात थी।

प्रश्न 11. लेखक कौनसी कक्षा में जाकर बैठने लगा? उसके नाम के आगे कौन-सी टिप्पणी लिखी हुई थी?

उत्तर - लेखक पांचवी कक्षा में जाकर बैठ गया उसके नाम के आगे पांचवी नापास की टिप्पणी लिखी हुई थी।

प्रश्न 12. लेखक का पाठशाला में विश्वास केसे बढ़ने लगा?

उत्तर - मास्टरों के अपनेपन के व्यवहार तथा बसंत पाटिल की दोस्ती के कारण लेखक का पाठशाला में विश्वास बढ़ने लगा।

प्रश्न 13. कविताओं के साथ खेलते हुए लेखक को कौनसी दो बड़ी शक्तियां प्राप्त हुई?

उत्तर - 1. अकेलेपन से कोई ऊब नहीं होती थी।

2. लेखक ने इन कविताओं को अपनी खुद की चाल में गाना शुरू किया।

प्रश्न 14. मास्टरजी ने कौन-सी कविता लिखी जिससे लेखक अत्यंत प्रेरित हुआ।

उत्तर - मास्टरजी ने अपने दरवाजे पर छाई हुई मालती की बेल पर एक कविता लिखी जिससे लेखक अत्यंत प्रेरित हुआ।

शेखावाटी मिशन - 100

निबधात्मक प्रश्न -

प्रश्न 15. यशोधर बाबू किशनदा के पटु शिष्य है। उदाहरण सहित सिद्ध कीजिए।

अथवा

यशोधर पंत पर किशन दा के प्रभाव की समीक्षा कीजिए।

अथवा

यशोधर बाबू अपने रोल मॉडल किशनदा से क्यों प्रभावित है। सिल्वर वैडिंग के आधार पर लिखिए।

उत्तर - मैट्रिक पास करने के पश्चात् यशोधर बाबू दिल्ली आ गए थे। जहां किशनदा नामक पहाड़ी ग्रमीण क्षेत्र के निवासी सचिवालय में उच्च अधिकारी थे। पहाड़ी गांवों से आने वाले बेरोगाजर युवकों को यहां आश्रय देने के साथ-साथ वे उन्हें सरकारी नौकरी भी दिलवाते थे। यशोधर बाबू के साथ भी ऐसा ही हुआ। वे किशनदा के क्वार्टर पर कई महीनों तक रहे और अन्त में सरकारी नौकरी भी मिल गई। उनके जीवन पर किशनदा के जीवन का गहरा प्रभाव पड़ा जिसका पालन उन्होंने किशनदा की मृत्यु के बाद भी किया। पहाड़ी संस्कृति का सम्मान करना, दिल्ली में रहने वाले पहाड़ी बन्धुओं को विविध त्योहरों पर इकट्ठा करना, गरीब रिश्तेदारों से प्रेम करना और उकनी सहायता करना आदि बातों का पालन ठीक किशनदा की ही तरह यशोदर बाबू भी करते थे। अत: लोग उन्हें किशनदा का मानस पुत्र भी कहते थे। वास्तव में वे उनके पटु शिष्य ही थे।

प्रश्न 16. सिल्वर वैडिंग की मूल संवेदना पर अपना स्पष्ट मत दीजिए।

अथवा

सिल्वर वैडिंग के माध्यम से लेखक क्या संदेश देने का प्रयास करता है?

अथवा

सिल्वर वैडिंग वर्तमान युग में बदलते जीवन मूल्यों की कहानी है। सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - कहानीकार मनोहर श्याम जोशी ने अपनी प्रसिद्ध कहानी सिल्वर वैंडिंग के माध्यम से कोई स्पष्ट संदेश नहीं दिया है। फिर भी कहानी के कथन में छिपा हुआ संदेश जरा सा ध्यान देने से स्पष्ट हो जाता है।

यशोधर बाबू दिल्ली सचिवालय के एक दफ्तर में सेक्शन ऑफीसर हैं। वे पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि हैं और अपने द्वारा बनाए गए घेरे में अपने आप को बंद रखना चाहते हैं। उनके लिए संसार में कोई प्रगति नहीं हो रही है। जो कुछ हो रहा है वह प्राचीन संस्कृति व मूल्यों को नष्ट करने के लिए हो रहा है।

कहानी का दूसरा पहलू उनके तीन पुत्र और एक पुत्री प्रस्तुत करते हैं वास्तव में वे उच्च शिक्षा प्राप्त हैं। बड़ा पुत्र एक प्राइवेट कंपनी में अच्छे वेतन पर लगा हुआ है। वे आधुनिक जीवन जीते हैं वे अपने पिता, रिश्तेदारों, धार्मिक अनुष्ठानों, प्राचीन रीति-रिवाजों आदि का तिरस्कार करते हैं। इस प्रकार लेखक ने पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से ग्रसित युवा पीढ़ी और पुरानी रूढ़ियों से प्रभावित पुरानी पीढ़ी के संघर्ष का चित्रण कर दोनों में समन्वय करने का संदेश दिया है।

प्रश्न 17. सिद्ध कीजिए की यशोधर बाबू किशनदा के मानस पुत्र थे।

अथवा

यशोधर बाबू की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

सिल्वर वैडिंग कहानी के आधार पर यशोधर बाबू के स्वभाव की किंन्हीं तीन विशेषताओं पर प्रकाश दालिए।

उत्तर - सिल्वर वैडिंग कहानी के आधार पर यशोधर बाबू में निम्न चारित्रिक विशेषताएं दिखाई देती है।

1. अनाथ बचपन- यशोधर बाबू के माता-पिता बचपन में मर गए थे, अपनी बुआ के पास रहकर उन्होंने मैट्रिक पास किया। और दिल्ली आकर किशनदा की शरण में आ गए। उनकी सेवा करते हुए ही उन्होंने दफ्तर में नौकरी प्राप्त की और उन्नति करते-करते ऑफिस के बड़े बाबू बन गए।

2. किशनदा का प्रभाव- लंबे समय तक किशनदा के साथ रहने के कारण उनके जीवन पर किशनदा के आदर्शों और सिद्धांतों का प्रभाव पड़ना स्वाभावित ही था। सिल्वर वैडिंग कहानी में मनोहर श्याम जोशी ने अनेक घटनाओं का सृजन करके उन्हें किशनदा का मानस पुत्र सिद्ध किया है, जैसे अपने ऑफिस के जुनियर के साथ सख्ती का बर्ताव करना और अंत में चलते समय हंसी-मजाक का वातावरण बनाकर दिनभर की गंभीरता को हल्का कर देना।

3. दिनचर्या- प्रात:भ्रमण को जाना, बिड़ला मंदिर दर्शन करने जाना, प्रवचन सुनना, गीता प्रेस गोरखपुर की पुस्तकें पढ़ना आदि वे कार्य जो उन्होंने किशनदा से विरासत में लिए थे।

4. सरल जीवन और त्याग भावना- उन्होंने कभी मकान बनाने की नहीं सोची क्योंकि किशनदा कहा करते थे कि मूर्ख मकान बनाते हैं और सयाने उनमें रहते हैं। किशनदा की तरह वे भी घर-गृहस्थी को बवाल ही समझते थे तथा अपना जीवन समाज सेवा में लगा देना चाहते थे।

5. परम्परा के संरक्षण- किशनदा के गांव चले जाने के बाद यशोधर बाबू ने उनकी बहुत-सी परम्पराओं को जीवित रखा था, जेसे घर में होली गंवाना, जन्यो पून्यों के दिन कुमाऊँनी बन्धुओं के जनेऊ बदलवाना, रामलीला की तालीम के लिए क्वार्टर से एक कमरा देना, इन आयोजनों पर होने वाले खर्च को स्वयं वहन करना आदि। इस प्रकार यशोधर बाबू अपने आदर्श किशनदा की विरासत को ढोने वाले वास्तव में उनके मानस पुत्र ही थे। जोशी जी ने उनके माध्यम से पहाड़ी संस्कृति को भी जीवंत कर दिया है।

प्रश्न 18. सिल्वर वैडिंग कहानी का कथानायक पाश्चायत्य संस्कृति के अन्धानुकरण एवं बदलते मानवीय मूल्यों पर आधारित है। उक्त कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

अथवा

पुराने होते जा रहे जीवन मूल्यों और नए प्रचलनों के बीच यशोधर पंत के संघर्ष पर प्रकाश डालिए।

अथवा

यशोधर पंत की पीढ़ी की विशेषता यह है कि वे पुराने को अच्छा समझते हैं और वर्तमान से तालमेल नहीं बिठा पाते। कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर - सिल्वर वैडिंग मनोहर श्याम जोशी की विचारोत्तेजक कहानी है। इसका कथानक पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण एवं बदलते मानवीय मूल्यों पर आधारित है। इसके प्रधान पात्र है यशोधर बाबू। यशोधर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव और आकर्षण से पूरी तरह मुक्त नहीं है, वे उसके समर्थक तो नहीं है किन्तु स्पष्ट विरोधी भी नहीं हैं। इस संबंध में वे एक द्वन्द्व से घिरे है। कहानी के अन्य पात्र- उनकी पत्नी, पुत्र, पुत्री आदि पाश्चात्य विचारों तथा प्रथाओं के समर्थक हैं। उनकी पुत्री और पत्नी का पहनावा पश्चिमी पहनावे से प्रभावित है। उनकी पत्नी बिना बांहों का ब्लाउज पहनती है। होठों पर लिपिस्टिक लगाती है। घर से बाहर दालभात खा लेती है। उनकी पुत्री जींस के साथ बिना बांहों वाला टाप पहनती है वह डॉक्टरी पढ़ने अमेरिका जाना चाहती है। उनके पुत्रों ने पिता की बिना इच्छा के घर में सभी आधुनिक सामान एकत्र कर लिए है। यशोधर भी इनको सामाजिक सम्मान पाने में सहायक मानते हैं।

यशोधर के विवाह की पच्चीसवीं वर्ष गांठ पर सिल्वर वैडिंग का आयोजन दफ्तर में सहायकों तथा घर पर परिवार के लोगों द्वारा किया जाता है। यशोधर दफ्तर में हुए आयोजन हेतु तीस रूपये तो देते हें परन्तु इसमें

शेखावाटी मिशन - 100

शामिल नहीं होते हैं। इसी प्रकार घर पर आयोजित पार्टी में यशोधर ने पत्नी के साथ केक तो काटा परंतु अंडा होने के कारण उसे खाया नहीं। उन्होंने अधूरे मन से पार्टी में मजा लिया और भूषण द्वारा लाए गए गाउन को पहना-।

प्रश्न 19. जूझ शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए यह स्पष्ट करें कि क्या यह शीर्षक कथा-नायक की किसी केन्द्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है।

उत्तर - जूझ का कथानायक आनंदा एक संघर्षशील व्यक्तित्व का धनी है। वह अपने पिता के जोर देने के कारण खेती के काम में लगा रहता है। उसका पिता उसकी पढ़ाई छुड़ा देता है। स्कूल जाकर पढ़ाई करने के लिए उसे संघर्ष करना पड़ता है । इसके बाद स्कूल में मन लगाने, गणित विषय में पारंगत होने, मराठी भाषा में कविता रचने आदि के लिए भी उसे जूझना पड़ता है। इस प्रकार जूझ का कथानायक अपने जीवन में विपरीत और कठिन परिस्थितियों में निरन्तर जूझता है और सफलता प्राप्त करता है। नायक के संघर्षपूर्ण जीवन की कथा होने के कारण और इसका शीर्षक कथानक की प्रमुख समस्या पर आधारित होने के कारण अत्यंत उचित व सटीक है। इससे नायक के चरित्र की प्रमुख विशेषता- संघर्षशीलता भी उजागर होती है।

प्रश्न 20. स्वयं कविता रच लेने का आत्म-विश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ?

अथवा

जूझ कहानी के लेखक को कविता लिखने की प्रेरणा कैसे मिली?

अथवा

जूझ कहानी के लेखक में कविता-रचना के प्रति रूचि कैसे उत्पन्न हुई पाठ के आधार पर बताइए?

अथवा

जूझ के लेखक को मराठी अध्यापक क्यों अच्छे लगते थे?

अथवा

जूझ कहानी के लेखक की रूचि काव्य-रचना की ओर जगाने में उसके अध्यापक के योगदान पर टिप्पणी दीजिए।

उत्तर - मराठी भाषा के अध्यापक ना. वा. सौंदलगेकर की प्रेरणा से कथानायक के मन में कविता लिखने का भाव पैदा हुआ। जिस प्रकार अध्यापक जी को अनेक कविताएं कठंस्थ थी उसी प्रकार लेखक ने भी अनेक कविताएं कंठस्थ कर ली जिन्हें वह अकेले स्थान पर ढ़ोर चराते समय या खेत में पानी देते समय जोर-जोर से गाया करता था।

मराठी भाषा के मास्टर सौंदलगेकर जिस प्रकार कविता पढ़ते थे वह एकान्त में उसकी नकल करता था। वे अनेक छंदों, को, लय, यति-गति और ताल से गाते थे फिर बैठकर अभिनय के साथ कविता का भाव ग्रहण कराते थे। लेखक भी उसी तरह अकेले में कविता गाता, अभिनय करता हुआ उसका भाव ग्रहण करता था। मास्टर जी ने अनेक कवियों के संस्मरण सुनाये। इससे लेखक ने जाना कि कवि लोग भी उसकी तरह ही हाड़-मांस के आदमी होते हैं। इससे उसके मन में आत्म-विश्वास पैदा हो गया कि वह भी कविता कर सकता है। अपने आस-पास अपने गांव में, अपने खेतों में कितने ही ऐसे दृश्य हैं जिन पर कविता लिखी जा सकती है। अपने दरवाजे पर छाई हुई मालती की बेल पर जब मास्टरजी कविता लिख सकते हैं तो वह क्यों नहीं लिख सकता। लेखक के मन में इस प्रकार के विचार आने लगे। भैंस चराते समय वह जंगली फूलों पर कविता लिखता और जोर-जोर से गुनगुनाता कागज और पेन्सिल खीसा में हर समय रखता कभी भैंस की पीठ पर लकड़ी के टुकड़े से अथवा कंकड से सिला पर कविता लिखता और मास्टर जी को दिखाता, कभी-कभी रात

शेखावाटी मिशन - 100

को ही मास्टरजी के घर जाकर कविता दिखाता वे देखते और शाबासी देते, काव्य शास्त्र का ज्ञान कराते। इस सबसे मास्टर जी से लेखक का अपनापन हो गया, अलंकार, छंद का ज्ञान हो जाने पर वह अच्छी कविता लिखने लगा।

प्रश्न 21. जूझ के नायक के माध्यम से उपन्यासकार किशोर छात्रों में पढ़ने में रूचि लेने की प्रेरणा देता है। यही इस उपन्यास का उद्देश्य है। सिद्ध कीजिए।

अथवा

जूझ कहानी के लेखक के जीवन-संघर्ष के उन बिन्दुओं पर प्रकाश डालिए जो हमारे लिए प्रेरणादायक हैं।

अथवा

जूझ कहानी प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच संघर्ष की कहानी है। सिद्ध कीजिए।

अथवा

लेखक आनंद यादव के छात्र-जीवन से क्या क्या शिक्ष्या मिलती है।

उत्तर - जूझ कहानी की प्रेरणादायी संघर्ष गाथा है। विपरीत परिस्थितियों में मां को साथ लेकर दत्ताजी राव को समझाता है और दादा से पढ़ने की अनुमति प्राप्त करता है। खेत में कठोर मेहनत करता है और विद्यालय में भी कठिनाइयों का सामना करता है। सभी संघर्षों पर विजय पाते हुए लेखक सफलता प्राप्त करता है। जूझ उपन्यास का लेखक आत्मकथात्मक शैली में किशोर मन की उलझनों को अपने ढंग से अभिव्यक्ति प्रदान कर किशोर छात्रों को हर बाधा को पार करके भी पढ़ाई करने और लगन के साथ पढ़कर कक्षा में प्रथम आने की प्रेरणा देता है। साथ ही लेखक का उद्‌देश्य विद्यार्थियों के मन में यह भाव भी उत्पन्न करना है कि अपने योग्य अध्यापकों से केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं वरन् अन्य गुण जैसे कविता करना आदि भी ग्रहण करना चाहिए। कथानायक अपने मराठी के अध्यापक सौंदलगेकर से कविता करना सीखता है और उनसे भी अच्छा कवि बन जाता है। कथानायक पढ़ाई में बाधक अपने पिता (दादा) को समझाने के लिए दत्ता राव सरकार की सहायता लेता है। यह उसकी चतुराई ही है कि वह दादा को समझाने के लिए दत्ता राव को और दत्ता राव को समझाने के लिए अपनी माता को तैयार करता है। इस युक्ति से वह अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेता है। अत: हर किशोर को अपने छोटे होने की हीनग्रंथि को त्यागकर अपने अन्दर आत्म-विश्वास पैदा करना चाहिए।

इस प्रकार कथानायक अपनी लगन, परिश्रम और बुद्धिमता से कक्षा में योगय एवं बुद्धिमान छात्र बसंत पाटिल की बराबरी कर लेता है। और उससे भी आगे कवि सौंदलगेकर से कविता करना सीखकर अपनी योगयता का परिचय देता है।

इस प्रकार इस उपन्यास की रचना का उद्‌देश्य किशोरों को व्यक्तिगत समस्याओं को स्वयं संघर्ष करके सुलझाने की प्रेरणा देने के साथ-साथ ही उन्हें योग्य विद्यार्थी बनाना भी है।

शेखावाटी मिशन - 100

रचनात्मक लेखन

पत्र-एवं-प्रारूप लेखन

(अर्द्धशासकीय पत्र, निविदा, विज्ञप्ति, ज्ञापन, अधिसूचना)

अर्द्धसरकरी/अर्द्धशासकीय पत्र

जब कोई अधिकारी अपने समकक्ष अधिकारी को, आपसी पत्र व्यवहार, वैचारिक आदान-प्रदान करने स्पष्टीकरण देने, सलाह देने/प्राप्त करने या किसी खास विषय पर ध्यान आकृष्ट करने के लिए जिस पत्र का प्रयोग करता है उसे अर्द्धसरकारी या अर्द्धशासकीय पत्र कहते हैं।

अर्द्धसरकारी पत्र का प्रारूप

प्रेषक का नाम मय पद — कार्यालय/विभाग का नाम एवम् पता

पत्र-क्रमांक........ — दिनांक...........

प्रेषित का नाम व संबोधन

प्रियश्री/सुश्री/आदरणीय आदि

पत्र का मध्य भाग जिसमें कारण, समाधान, आदि का ब्योरा हो। पत्र समापन के साथ जिसके लिए पत्र लिखा जा रहा हो, के लिए हृदयस्पर्शी शब्दों के साथ स्वास्थ्य आदि के समाचार।

भवन्निष्ठ/शुभेच्छु,

संबोधन के साथ प्रेषक

प्रेषित का नाम,पद एवं पता — के हस्ताक्षर व नाम ....

उदाहरणः- सचिव, शिक्षा विभाग, राजस्थान, जयपुर की ओर से आयुक्त, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग को एक अर्द्धशासकीय पत्र लिखिए, जिसमें सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की नियमित स्वास्थ्य जांच का आग्रह हो।

राजस्थान सरकार

अविनाश तंवर — शिक्षा विभाग

सचिव — शासन सचिवालय, जयपुर

अ.शा.प्र.क्र.169ग 741 — दिनांक-27 जनवरी,2001

प्रियश्री हरगोविन्द जी,

आपको विदित है कि राजस्थान के लगभग 80 प्रतिशत विद्यार्थी सरकारी विद्यालयों में ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत हैं, जिनकी आर्थिक स्थिति मध्यम् अथवा निम्न स्तर की है, इन विद्यार्थियों के स्वास्थ्य की नियमित जांच हेतु विभाग द्वारा नियमित रूप से शिविर लगाए जाते हैं आप से आग्रह है कि जिला चिकित्सा अधिकारियों को अपनी विशिष्ट सेवाएं इन शिविरों में देने हेतु पाबंद करें ताकि ग्रामीण-जीवन का एवं भावी नागरिकों का स्वास्थ्य उन्नत हो सकें।

आशा है आपका सहयोग प्राप्त होगा।

धन्यवाद — भवदीय

हस्ताक्षर

(अविनाश तंवर)

सेवामें,

श्री हरगोविंद सोढ़ी

आयुक्त स्वास्थ्य एवं-परिवार कल्याण

शेखावाटी मिशन - 100

राजस्थान, सरकार।

निविदा

सरकारी एवं गैर सरकारी प्रतिष्ठानों द्वारा अपने किसी निर्माण कार्य को सम्पन्न कराने, सामान की आपूर्ति करने आदि के लिए उक्त कार्य कर सकने वाले व्यक्तियों की सूचनार्थ समाचार पत्रों आदि में जो आमंत्रण प्रकाशित किया जात है, उसे निविदा कहते हैं।

निविदा प्रपत्र का शुल्क,धरोहर राशि एवं प्रचार के मानदंड समय समय पर सरकार द्वारा निर्धारित किये जाते हैं।

उदाहरण-

कार्यालय जिला शि.एवं प्र.संस्थान

उदयपुर, राजस्थान।

क्रमांक-117 दिनांक 10 जनवरी,2022

निविदा सूचना

उदयपुर जिलान्तर्गत आठवीं बोर्ड परीक्षा 2022 के लिए उत्तरपुस्तिका एवं अन्य सामग्री सप्लाई करने हेतु प्रतिष्ठित फर्मों से मोहरबंद निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र स्थानीय कार्यालय से निर्धारित शुल्क पर कार्यालय समय में प्राप्त की जा सकती है। निविदाएं दिनांक 21 जनवरी 2022 को अपराह् 2.00 बजे तक प्राप्त किए जाएंगे एवं सायं 4.00 बजे उपस्थित निविदाताओं के समक्ष खोली जाएंगी।

क्र. स.	विवरण	अनुमानित राशि	धरोहर राशि	निविदा प्रपत्र शुल्क	आपूर्ति
1	उत्तर पुस्तिका 12 पृष्ठ	3:00 लाख	6000	100	1 माह
2	नक्शे (भारत व संसार)	30 : 00 हजार	500	100	1 माह
3	ग्राफ पेपर	50: 00 हजार	300	100	1 माह

शर्तें:-

1. निविदा खोलने की तिथि में परिवर्तन या रद्द करने का पूर्ण अधिकार अधोहस्ताक्षरकर्ता का होगा।
2. आपूर्ति में विलम्ब या गुणवत्ता में कमी पर निविदाताओं के विरूद्ध कार्रवाई की जाएगी।
3. किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र उदयपुर होगा।

हस्ताक्षर
(क,ख,ग)
प्रधानाचार्य
डाइड, उदयपुर

विज्ञप्ति

विज्ञप्ति शब्द से तात्पर्य है सूचित करने की क्रिया। सरकारी या गैर सरकारी प्रतिष्ठान अपने किसी निर्णय, निश्चय, घोषणा, निर्देश, योजना आदि से संबंधित सूचनाओं को संबंधित व्यक्तियों एवं आम जनता तक पहुंचाना चाहते हैं, उसे विज्ञप्ति कहते हैं। विज्ञप्ति सरकारी गजट के अतिरिक्त समाचार पत्रों में प्रकाशित की जाती है।

शेखावाटी मिशन - 100

उदाहरणः-

राजस्थान लोकसेवा आयोग

अजमेर, राजस्थान

क्रमांक-1511 **दिनांक-10 मई, 2020**

आयोग द्वारा वरिष्ठ अध्यापक द्वितीय श्रेणी, माध्यमिक शिक्षा विभाग हेतु ली जाने वाली संवीक्षा परीक्षा दिनांक 20 मई, 2020 के स्थान पर 16 जून, 2020 को आयोजित होगी। परीक्षा केन्द्र व अन्य सूचनाएं यथावत् रहेंगी।

(अ,ब,स)

सचिव

उदाहरण-2

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान. अजमेर

क्रमांक-1151 दिनांक 4 जून, 2022

उच्च माध्यमिक परीक्षा 2022 की पूरक परीक्षाएं 7 जुलाई, 2022 से समस्त पंचायत समिति मुख्यालयों पर आयोजित की जाएंगी। परीक्षार्थी अपने प्रवेश पत्र व समय सारिणी बोर्ड की बेबसाइट से अपलोड कर लें। अन्य किसी भी प्रकार की सूचना हेतु संबंधित केन्द्रधीक्षक से संपर्क करें।

क,ख,ग

सचिव

ज्ञापन

शासकीय पत्र व्यवहार में जब किसी अधिकारी द्वारा समकक्ष अधिकारियों अथवा कर्मचारियों को सामान्य सूचना, संदेश आदि देना हो अर्थात-विषय सामग्री कम महत्वपूर्ण हो तब कार्यालय द्वारा प्रेषित पत्र ज्ञापन कहलाता है।

उदाहरणः-

राजस्थान सरकार

उच्च शिक्षा विभाग, राजस्थान, जयपुर

क्रमांक-ज्ञा.सं. -14 (द) दिनांक 4 अप्रैल, 2022

ज्ञापन

विषय-रिव्यू डी.पी.सी.बाबत्।

विभाग में डी.पी.सी. से संबंधित बकाया मामलों का त्वरित निस्तारण 25 मई, 2022 तक अनिवार्यतः किया जाना है। नवीन शिक्षा सत्र से पूर्व रिक्त पदों पर चयनित आचार्यों की नियुक्ति भी करें।

हस्ताक्षर

क,ख,ग

विशिष्ट सचिव

शेखावाटी मिशन - 100

अधिसूचना

केन्द्र अथवा राज्य सरकार जब सरकारी आदेशों को आम जनता के लिए प्रसारित करती है, तो इन सूचनाओं को वैधानिक दृष्टि से अधिसूचना कहा जाता है।

इनका संबंध आम जनता से होने के कारण इन्हें राजकीय राजपत्र में अनिवार्यतः प्रकाशित किया जाता है। अधिसूचना किसी अधिनियम के अन्तर्गत जारी की जाती है। तथा अन्य पुरूष शैली में लिखी जाती है।

उदाहरण –

राज्य निर्वाचन आयोग, राजस्थान,जयपुर

क्रमांक–103 दिनांक 2 जून, 2021

अधिसूचना

आयोग की अधिसूचना सं. एफ 1 धारा 3 दिनांक 2 मई, 2021 के क्रम में राजस्थान की नगरपालिकाओं में रिक्तस्थानों पर निर्वाचन 28 जून को करवाया जाएगा। इसमें क्रम सं. 13 पर अंकित दौसा, जिलान्तर्गत बांदीकुई नगरपालिका के वार्ड नं. 2 उपचुनाव अग्रिम आदेश तक स्थगित किया जाता है।

राज्यपाल महोदय की आज्ञा से

हस्ताक्षर

अ, ब,स

उपसचिव

राज्य निर्वाचन आयोग

प्रतिलिपि सूचनार्थ –

1. जिला निर्वाचन अधिकारी दौसा
2. निदेशक, राजकीय, मुद्रणालय, प्रकारनार्थ।

हस्ताक्षर

उपसचिव

राज्य निर्वाचन आयोग

निबंध लेखन –

1. कोरोना वायरसः एक विश्वव्यापी महामारी
2. बढ़ती महंगाईः घटता जीवन स्तर
3. वैशिवक महामारी के दौर में ऑनलाइन शिक्षण
4. इन्टरनेटः सूचना क्रांति
5. भारतीय कृषक
6. मरूभूमि का जीवन धन–जल
7. घटती सामाजिकता बढ़ते संचार साधन
8. बेरोजगारीः समस्या और समाधान
9. डिजिटल इंडिया
10. राजस्थान और पर्यटन की संभावनाएं

शेखावाटी मिशन - 100

कक्षा 12
अनिवार्य हिन्दी
अपठित गद्यांश

प्रश्न 1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गए वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

उत्तर - प्राचीन काल में भारतीय नारी का स्वरूप समादरणीय रहा है। यहां नारी की प्रतिष्ठा अर्द्धांगिनी के रूप में की गई है, यहां पहले नारी को लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा का रूप माना जाता था। जिस प्रकार लक्ष्मी धन की सरस्वती विद्या की ओर दुर्गा शक्ति की अधिष्ठात्री देवी है, उसी प्रकार नारी को इन तीनों के देवीत्व रूप से मंडित माना जाता था। फलस्वरूप प्राचीन भारत में नारी का देवी रूप पूज्य था। परंतु परवर्ती काल में नारी का गौरव कम होने लगा और उसे भोग-विलास की वस्तु माना गया, भारत में विधर्मियों और विदेशियों के आक्रमणों से सुरक्षा हेतु नारी को पर्दा प्रथा, बाल-विवाह, बहु-विवाह, जौहर प्रथा, सती प्रथा आदि के द्वारा उत्पीड़न भोगना पड़ा, मध्यकाल में विशेषकर मुगलों के आगमन से अनेक कुप्रथाओं रूढ़ियों और अनैतिक दुराचारों के प्रसार से नारी का जीवन शोषण, उत्पीड़न एवं व्यथा से ग्रस्त बनता गया।

प्रारंभ में जब नारी के जीवन को त्याग और तपस्या से मंडित माना जाता था तब उसके जीवन का पूर्वकाल तपस्या का और उत्तरकाल त्याग का काल था, इन दोनों कालों में वह अच्छे परिवार श्रेष्ठ पति एंव गुणवान संतान की प्राप्ति में तथा उनकी सुख-सुविधाओं की निरंतर कामना करने में अपना जीवन

समर्पित कर देती थी, परंतु वैचारिक व्यामोह के कारण पुरूष वर्ग नारी के त्याग उसकी साधना एवं समर्पणशीलता को उसकी दुर्बलता अथवा विलासिता मानने लगा फलस्वरूप नारी का जीवन दयनीय बन गया। परन्तु वर्तमान काल में ज्ञान-विज्ञान और स्त्री-शिक्षा का प्रसार होने से नारी-चेतना शोषण-उत्पीड़न के विरूद्ध जागृत हो गई है। अब पढ़ी-लिखी नारियां अपने पैरों पर खड़ी होकर पुरूष के समान सभी कार्यों में दक्षता दिखा रही है। अब समान अधिकारों की परम्परा चलने लगी है, शहरी क्षेत्रों में नारी पर्दा-प्रथा तथा विकृत रूढ़ियों से मुक्त हो गई है, परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी सामाजिक कुरीतियां प्रचलित है, इन कुरीतियों को दूर करने के अनेक उपाय किये जा रहे हैं। इससे नारी जीवन को समुन्नत बनाकर राष्ट्र के उत्थान में इनकी सहभागिता में वृद्धि की जा रही हैं।

1. उपर्युक्त गधांश का उचित शीर्षक है-
(अ) भारतीय नारी- तब और अब (ब) भारतीय नारी के रूप अनेक
(स) नारी का बदलता स्वरूप (द) नारी की जीवन यात्रा (अ)

2. नारी को किस देवी के रूप में माना जाता था।
(अ) लक्ष्मी (ब) दुर्गा (स) सरस्वती (द) उपरोक्त सभी (द)

3. मध्यकाल में किसके आगमन से कुप्रथाओं और रूढ़ियों का प्रसार हुआ
(अ) मुगल (ब) यवन (स) अंग्रेज (द) इनमें से कोई नहीं (अ)

4. वर्तमान में नारी का स्वरूप है
(अ) देवीत्व का (ब) भोग विलास मूर्ति का
(स) सदयनीयता का (द) समान अधिकारों को प्राप्त करने का (द)

5. किस काल में नारी का गौरव कम होने लगा था।
(अ) प्राचीन काल (ब) मध्यकाल/परवर्तीकाल (स) वर्तमान काल (द) इनमें से कोई नहीं (ब)

6. प्राचीन काल में नारी का कैसा रूप प्रचलित था
(अ) देवी रूप (ब) साध्वी रूप (स) गृहणी रूप (द) अद्धांगिनी रूप (अ)

शेखावाटी मिशन - 100

अपठित गद्यांश

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

धर्म का वास्तविक गुण तब प्रकट होता है, जब हम जीवन का सत्य जानने के लिए और इस दुनिया की दया और क्षमा योग्य वस्तुओं में वृद्धि के लिए निरन्तर खोज करते है और सतत अनुसंधान करते हैं। अनुसंधान या खोज की लगन और उन उद्देश्य का विस्तार जिन्हें हम प्रेम अर्पण करते है ये वास्तविक रूप में आध्यात्मिक मनुष्य के दो पक्ष होते हैं। हमें सत्य की खोज तब तक करते रहना चाहिए जब तक हम उसे पा न ले और उससे हमारा साक्षात्कार न हो। जो कुछ भी हो, हर मनुष्य में वहीं तत्व मौजूद हैं, अत: वह हमारे प्यार और हमारी सद्भावना का अधिकारी है। समाज और सारी सभ्यता केवल इस बात का प्रयास है कि मनुष्य आपस में सद्भाव के साथ रह सके। हम इस प्रयास को तब तक बनाए रखते है। जब तक सारी दुनिया हमारा अपना परिवार न बन जाए।

1. **धर्म का वास्तविक गुण कब प्रकट होता है?**

   (1) जीवन सत्य को जानने से (2) प्रेम से
   (3) क्षमा-दया योग्य वस्तुओं से (4) उपर्युक्त सभी (4)

2. **आध्यात्मिक मनुष्य के कितने पक्ष होते है?**

   (1) चार (2) दो (3) सात (4) तीन (2)

3. **आध्यात्मिक मनुष्य के दो पक्ष कौन - कौनसे होते है?**

   (1) जीवन सत्य की खोज (2) स्वयं को अर्पित करना
   (3) सृष्टि-प्रक्रिया के सत्यान्वेषण (4) उपर्युक्त सभी (4)

4. **हर मनुष्य में कौनसा तत्व मौजूद है?**

   (1) धर्म का वास्तविक गुण सत्य का साक्षात्कार (2) आध्यात्मिकता
   (3) प्रेम का भाव व आत्मीयता (4) उपर्युक्त सभी (4)

5. **हमें सत्य की खोज कब तक करते रहना चाहिए?**

   (1) जब तक सफलता न मिले तक तक (2) जब तक सत्य का साक्षात्कार न हो
   (3) जब तक सत्य को देख न ले (4) जब तक सत्य को पा न लें (4)

6. **समाज और सभ्यता किस बात का प्रयास है?**

   (1) सद्भावना (2) शत्रुता का (3) प्रेम का (4) सहयोग का (1)

शेखावाटी मिशन - 100

अपठित गद्यांश

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

गाँधीजी के अनुसार शिक्षा शरीर, मस्तिष्क और आत्मा का विकास करने का माध्यम है। वे 'बुनियादी शिक्षा' के पक्षधर थे। उनके अनुसार प्रत्येक बच्चे को अपनी मातृभाषा की नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा मिलनी चाहिए जो उसके आस-पास की जिंदगी पर आधारित हो। हस्तकला एवं काम के जरिए दी जाए, रोजगार दिलाने के लिए बच्चे को आत्मनिर्भर बनाए तथा नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास करने वाली हो। गाँधीजी के उक्त विचारों से स्पष्ट है कि वे व्यक्ति और समाज के सम्पूर्ण जीवन पर अपनी मौलिक दृष्टि रखते थे तथा उन्होनें अपने जीवन में सामाजिक एवं राजनीतिक आन्दोलनों में भाग लेकर भारतीय समाज एवं राजनीति में इन मूल्यों को स्थापित करने की कोशिश की। गाँधीजी की सारी सोच भारतीय परम्परा की सोच है तथा उनके दिखाए मार्ग को अपनाकर प्रत्येक व्यक्ति और सम्पूर्ण राष्ट्र वास्तविक स्वतंत्रता, सामाजिक सद्‌भाव एवं सामुदायिक विकास को प्राप्त कर सकता है। भारतीय समाज जब-जब भटकेगा तब-तब गाँधीजी उसका मार्गदर्शन करने में सक्षम रहेंगे।

1. गाँधीजी के अनुसार प्रत्येक बच्चे को किस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए?

(1) बुनियादी शिक्षा (2) आत्मा के विकास की शिक्षा (3) नैतिक शिक्षा (4) उपर्युक्त सभी (4)

2. सामाजिक शब्द के मूल शब्द व प्रत्यय बताइए?

(1) सामाजिक = समाज + इक (प्रत्यय + मूल शब्द)

(2) सामाजिक = सामाज + इक (मूलशब्द + प्रत्यय)

(3) सामाजिक = समाज + इक - समाज (मूल शब्द) + इक प्रत्यय

(4) समाजिक = समाज + इक - समाज (इक प्रत्यय) + मूल शब्द (3)

3. गाँधीजी के अनुसार शिक्षा है?

(1) आत्मा के विकास का माध्यम (2) मस्तिष्क के विकास का माध्यम

(3) शरीर के विकास का माध्यम (4) उपर्युक्त सभी (4)

4. प्रत्येक बच्चे के जीवन में कौनसे मूल्य स्थापित करने चाहिए?

(1) सामाजिक (2) राजनीतिक (3) नैतिक (4) उपर्युक्त सभी (4)

5. भारतीय समाज जब-जब भटकेगा तब-तब समाज का मार्गदर्शन करने में कौन सक्षम रहेगा?

(1) गाँधीजी (2) सुभाषचन्द्र बोस (3) स्वामी विवेकानन्द (4) दयानन्द सरस्वती (1)

6. गाँधीजी की सारी सोच है?

(1) भारतीय परम्परा की सोच (2) भारतीय आधुनिकता की सोच

(3) पाश्चात्य सभ्यता की सोच (4) आधुनिक व प्राचीन परम्परा की सोच (1)

शेखावाटी मिशन - 100

अपठित पद्यांश

निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

जन्म दिया माता-सा जिसने, किया सदा लालन-पालन
जिसके मिट्टी - जल से ही है रचा गया हम सबका तन।
गिरिवर नित रक्षा करते हैं, उच्च उठा के श्रृंग महान
जिसके लता द्रुमादिक करते हमको अपनी छाया दान।
माता केवल बाल-काल में निज अंक में धरती है
हम अशक्त जब तलक तभी तक पालन - पोषण करती है।
मातृभूमि करती है सबका लालन सदा मृत्यु पर्यंत
जिसके दया-प्रवाहों का होता न कभी सपने में अंत।
मर जाने पर कण देहों के इसमें ही मिल जाते हैं
हिंदू जलते, यवन-ईसाई शरण इसी में पाते है।
ऐसी मातृभूमि मेरी है स्वर्गलोक से भी प्यारी
उसके चरण - कमल पर मेरा तन-मन-धन सब बलिहारी।।

1. **यवन ईसाई शरण इसी में पाते हैं - का अभिप्राय है -**
(1) यहाँ सभी धर्म स्वतत्रंतापूर्वक रहते है (2) यहाँ सभी धर्म शांतिपूर्वक रहते है
(3) कोई भी हो मरने पर उसे यही शरण मिलती है (4) उपर्युक्त सभी (3)

2. **'श्रृंग महान' शब्द किसका प्रतीक है?**
(1) हिमालय का (2) सिंह का (3) सींग का (4) रक्षक का (1)

3. **हम सबका शरीर किससे बना है**
(1) मिट्टी - जल (2) लालन पालन (3) दोनों से (4) किसी से नहीं (1)

4. **'चरण कमल' में प्रयुक्त अलंकार है -**
(1) उपमा (2) रूपक (3) उत्प्रेक्षा (4) मानवीकरण (2)

5. **'मृत्युपर्यंत' में समास है-**
(1) तत्पुरूष (2) द्विगु (3) अव्ययीभाव (4) द्वंद्व (3)

6. **मातृभूमि पालन करती है-**
(1) बाल काल तक (2) मृत्युपर्यंत तक (3) अशक्त रहने तक (4) बलवान होने तक (2)

शेखावाटी मिशन - 100

अपठित पद्यांश

निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

शांति नहीं तब तक, जब तक सुख-भाग न नर का सम हो।
नहीं किसी को बहुत अधिक हो नहीं किसी को कम हो।
स्वयं माँगने से न मिले, संघात पाप हो जाए।
बोलो धर्मराज, शोषित वे जिए या कि मिट जाए?
न्यायोचित अधिकार मांगने से न मिले, तो लड़ के तेजस्वी छीनते
समय को, जीत या कि खुद मर के।
किसने कहा पाप है? अनुचित स्वत्व - प्राप्ति - हित लड़ना।
उठा न्याय का खड्ग समर में अभय - मारना - मरना?

1. कवि के अनुसार शांति के लिए आवश्यक शर्त है?

(1) संसार में संसाधनों का समान वितरण
(2) केवल धनवान लोगों को महत्त्व
(3) केवल धनवान लोगों को महत्त्व शोषित का और शोषण
(4) असामाजिक असमानता (1)

2. तेजस्वी किस प्रकार समय को छीन लेते है?

(1) धन से (2) बल से (3) बुद्धि से (4) लड़ के (4)

3. न्यायोचित अधिकार के लिए क्या करना चाहिए ?

(1) संघर्ष (2) मेहनत (3) पाप (4) पुण्य (1)

4. कृष्ण युधिष्ठर को युद्ध के लिए क्यों प्रेरित कर रहे हैं?

(1) हक प्राप्त करने के लिए (2) युद्ध करने के लिए
(3) धर्म करने के लिए (4) समाज सेवा के लिए (1)

5. स्वत्व कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

(1) स्वार्थ से (2) दया से (3) संघर्ष से (4) मेहनत से (3)

6. अपने हक के लिए लड़ना है?

(1) पाप (2) अन्याय (3) न्याय (4) धर्म (3)

शेखावाटी मिशन - 100

अपठित पद्यांश

निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

हो गई है पीर पर्वत सी पिघलानी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए,
आज ये दीवार पर्दो की तरह हिलने लगी
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत - बदलनी चाहिए,
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कही भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

1. **'इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए' इस पंक्ति में हिमालय से कवि का क्या तात्पर्य है?**
   (1) हिमालय पर्वत से (2) गंगा नदी से
   (3) सामाजिक पीड़ा (4) विद्रुपताओं एवं सांघतिक पीड़ा (4)
2. **सामाजिक परिवर्तन के लिए कवि ने क्या शर्त रखी है?**
   (1) समाज में आमूलचूल परिवर्तन (2) भष्ट समाज व्यवस्था
   (3) भ्रष्टाचार का उग्र स्वरूप (4) जनता में प्रेम व सहयोग (1)
3. **'ये सूरत बदलनी चाहिए' इसमें कवि किसकी सूरत बदलवाना चाहता है?**
   (1) देश की (2) समाज की (3) युवाओं की (4) विश्व की (1)
4. **'हो कही भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए' इस पंक्ति में कवि का क्या आशय है।**
   (1) क्रांति की भावना (2) जोश की भावना
   (3) अव्यवस्थाओं को बदलने की भावना (4) प्रेम की भावना (3)
5. **'पीरपर्वत' से आशय है?**
   (1) असहनीय पीड़ा से (2) भ्रष्टाचार से (3) निराश से (4) जोश से (1)
6. **'मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही' से तात्पर्य है?**
   (1) नवयुवको से (2) सामाजिक परिवर्तन से
   (3) राजनीतिक परिवर्तन से (4) देश के प्रत्येक व्यक्ति से (4)

शेखावाटी मिशन - 100

भाषा एवं लिपि, शब्दशक्ति एवं अलंकार

निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. माँ तथा परिवार द्वारा सीखी जाने वाली भाषा .... कहलाती है ।

उत्तर- मातृभाषा

2. हिन्दी भाषा परिवार में लगभग .... बोलिया सम्मलित है।

उत्तर- 15

3. हिन्दी भाषा .... लिपि में लिखी जाती है।

उत्तर- देवनागरी

4. पंजाबी भाषा .... लिपि में लिखी जाती है।

उत्तर- गुरूमुखी

5. छात्र पुस्तक पढ़ता है - वाक्य में .... शब्द शक्ति है।

उत्तर- अभिधा

6. जीवन में मनुष्य को अनेक पर्वत पार करने पड़ते है वाक्य में .... शब्दशक्ति है-

उत्तर- लक्षणा

7. मुख्य अर्थ में बाधा उत्पन्न होने पर कोई लोकप्रसिद्ध अर्थ अथवा शब्दकोशीय अर्थ ग्रहण करने पर जो शब्द शक्ति प्राप्त होती है। वह .... शब्द शक्ति कहलाती है।

उत्तर- लक्षणा

8. अभवा शब्दकोशीय अर्थ ग्रहण करने पर जो शब्द शक्ति प्राप्त ।

उत्तर- क

9. होती है वह .... शब्द शक्ति कहलाती है।

उत्तर- लक्षणा

10. मंगन को पट देखि पट देत बार-बार है काव्य पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर- श्लेष

11. 'मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ' पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर- विरोधाभास

12. संस्कृत .... लिपि में लिखी जाती है।

उत्तर- देवनागरी

13. एक निश्चित क्रमानुसार बार-बार आवृत्ति होती है तो वहाँ .... अलंकार माना जाता है।

उत्तर- अनुप्रास

14. जब किसी विशेष प्रयोजन से लक्षणा शब्दशक्ति का प्रयोग होता है तो वहा .... लक्षणा होती है।

उत्तर- प्रयोजनवती

15. 1. Quorum............. 2. Pact ....

उत्तर- 1. गणपुर्ति 2. समझौता

शेखावाटी मिशन - 100

16. .... भाषा की सबसे छोटी इकाई है, जिसके और टुकड़े नहीं हो सकते।

उत्तर- वर्ण

17. उर्दू भाषा .... लिपि में लिखी जाती है।

उत्तर- फारसी

18. 'प्रातःकालीन भ्रमण स्वास्थय के लिए उपयोगी है।' वाक्य में .... शब्द शक्ति है।

उत्तर- अभिधा

19. विभक्ति भए धन ना रहे, रहै जो लाख करोर। नभ तारे छिवि जात हैं ज्यों रहीम भए भोर। पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर- उदाहरण

20. 1. Demi official 2. Rehabiliation

उत्तर- अर्धशासकीय, पुनर्वास

21. सामान्यतः आपसी बातचीत में भाषा एवं संवाद आदि में जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, उसे .... भाषा कहते हैं।

उत्तर- मौखिक

22. देवनागरी लिपि का विकास .... लिपि से हुआ है।

उत्तर- ब्राह्मी

23. 'हाँ, एक तुम ही तो अच्छे आदमी हो' वाक्य में .... शब्द शक्ति है।

उत्तर- व्यंजना

24. जिस शब्द शक्ति के द्वारा शब्द के मुख्यअर्थ का बोध होता है उसे .... शब्द शक्ति कहते है।

उत्तर- अभिधा

25. दिन जल्दी-जल्दी ढलता है। पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर- अनुप्रास

26. चरण-कमल बन्दौ हरि राई - पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर- रूपक

27. Balance ...., Cadre ....

उत्तर- शेष, संवर्ग

28. भाषा के .... रूप होते है।

उत्तर- दो

29. किसी राष्ट्र के संविधान मान्य शासन के रूपों में प्रस्तुत तथा समस्त राष्ट्र में व्यवहार-योग्य भाषा को .... कहते हैं।

उत्तर- राष्ट्रभाषा

30. रामपुस्तक पढ़ता है वाक्य में .... शब्द शक्ति है।

उत्तर- अभिधा

शेखावाटी मिशन - 100

31. वाचक शब्द से निकलने वाला अर्थ .... कहलाता है।

उत्तर- वाच्यार्थ/मुख्यार्थ

32. जो भाषा परिष्कृत व्याकरण सम्मत, सर्वजन स्वीकार्य आदेश रूप से प्रचलित एवं शासन स्तर पर व्यवहृत होती है उसे .... भाषा कहते है।

उत्तर- परिनिष्ठित

33. लिपि में .... चिह्नों का प्रयोग किया जाता है?

उत्तर- वर्तनी

34. बाजार एक जादू है, वह जादू आँख की राह काम करता है वाक्य में .... शब्द शक्ति है।

उत्तर- लक्षणा

35. जब वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ से भिन्न कोई विलक्षण अर्थ व्यक्त होता है, उसे .... शब्द शक्ति कहते है।

उत्तर- व्यंजना

36. 'मैं सांसो के दो तार लिए फिरता हूँ' उक्त काव्य पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर- रूपक

37. 'पानी गए न ऊबरे मोती, मानस, चून' पंक्ति में .... अलंकार है?

उत्तर- श्लेष

38. मानव-समाज में अभिव्यक्ति का माध्यम .... है।

उत्तर- भाषा

39. सीमित क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली वाग्व्यवहार की वाणी को .... कहते है।

उत्तर- बोली

40. 'सुरेश हॉकी खेलते समय हवा से बाते करता है।' वाक्य में .... शब्द शक्ति है।

उत्तर- लक्षणा

41. प्रयोजन या उद्देश्य को लक्ष्य करके अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है, उसे .... लक्षणा कहते है।

उत्तर- प्रयोजनवती

42. शरारती बच्चे की तरह उक्त पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर- उपमा

43. बलिहारी नृप कूप की गुन बिन बूँद न देइ में .... अलंकार है।

उत्तर- श्लेष

44. VISA ...., Will ....

उत्तर- प्रवेशपत्र, इच्छापत्र

45. भाषा को शुद्ध रूप में लिखने तथा बोलने से संबंधित नियमों का ज्ञान होता है, उसे .... कहते है।

उत्तर- व्याकरण

46. भाषा के मौखिक रूप को अंकित करने के लिए जो चिह्न बने होते है उन्हें .... कहते है।

उत्तर- लिपि

शेखावाटी मिशन - 100

47. दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखै न कोय उक्त पंक्ति में .... अलंकार है।

उत्तर- यमक

48. भाषा सूक्ष्म है .... स्थूल है।

उत्तर- लिपि

49. 'मनु सास भरि अनुराग, जमुना जल लोटत डौले' काव्य पंक्ति में ....अलंकार है।

उत्तर- उत्प्रेक्षा

50. कोई बोली व्यापक रूप में प्रयुक्त होती है, उसमे साहित्य रचना होने लगती है। तब वह .... बन जाती है।

उत्तर- भाषा

अभिव्यक्ति एवं माध्यम

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न -

1. जन संचार के प्रमुख माध्यम कौनसे है?

उत्तर- प्रिंट, टीवी, रेडियो, इंटरनेट

2. समाचारपत्र जनसंचार का कौनसा माध्यम है?

उत्तर- मुद्रित माध्यम

3. समाचार लेखन कौनसी शैली में किया जाता है, नाम लिखिए-

उत्तर- उलटा पिरामिड शैली में।

4. समाचार लेखन में कितने ककारों को काम में लिया जाता है। नाम लिखिए।

उत्तर- समाचार लेखन में छः ककारों को काम मे लिया जाता हे, जो निम्न है क्या, कौन, कहाँ, कब, कैसे और क्यों।

5. उलटा पिरामिड शैली के अन्तर्गत समाचारों को कितने भागों में विभाजित किया जाता है?

उत्तर- तीन

6. उलटा पिरामिड शैली में समाचारों को कौनसे तीन भागों में विभाजित किया जाता है?

उत्तर- इंट्रो, बॉडी, समापन

7. भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का पहला दौर कब से प्रारम्भ माना जाता है।

उत्तर- सन् 1993 से

8. इंटरनेट क्या है?

उत्तर- इंटरनेट जनसंचार का सबसे नवीनतम लोकप्रिय माध्यम है।

9. टी.वी के विभिन्न चरण कौन-कौन से है।

उत्तर- फ्लेश या ब्रेकिंग न्यूज, ड्राईएंककर, फोनइन, एंकरविजुअल, लाइव एंकर पैकेज

10. फीचर लेखन क्या है?

उत्तर- समाचार पत्रों में समाचारों से हटकर कोई अन्य लेख या सूचना पढ़ने को मिलती हो उसे फीचर लेखन कहते है।

11. फीचर लेखन की क्या विशेषता है?

उत्तर- एक अच्छा फीचर सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ होना चाहिए।

शेखावाटी मिशन - 100

12. फीचर लेखन में कौनसी शैली का प्रयोग किया जाता है।

उत्तर- फीचर लेखन मे सदैव सीधा पिरामिड शैली का प्रयोग किया जाता है।

13. मीडिया की भाषा में बीट किसे कहते है।

उत्तर- किसी विषय की विशेष जानकारी रखने वाले पत्रकारो के बीच काम का विभाजन बीट कहलाता है।

14. फीचर शब्द किस भाषा से बना है?

उत्तर- फीचर शब्द लैटिन भाषा में FUCTURA से बना है।

15. फीचर के कोई चार प्रकार बताइए ?

उत्तर- व्यक्तिगत फीचर, समाचारपरक फीचर, यात्रापरक फीचर, चित्रपरक फीचर

16. फीचर लेखन में कैसा दृष्टिकोण रहता है?

उत्तर- निजी दृष्टिकोण

17. आलेख में मुख्य रूप से कितने अंग प्रयुक्त होते है?

उत्तर- आलेख में मुख्यत: दो अंग होते है।

18. आलेख और फीचर में एक अन्तर लिखिए।

उत्तर- आलेख का संबंध मस्तिष्क से है जबकी फीचर का संबंध हृदय से होता है।

19. पत्रकारिता की अत्यन्त आधुनिक विधा कौनसी है?

उत्तर- फीचर पत्रकारिता की अत्यन्त आधुनिक विधा है।

20. आलेख में किसी विषय का वर्णन कैसे किया जाता है?

उत्तर- आलेख में किसी विषय का वर्णन विषयानुकूल भाषा में क्रमबद्ध वर्णन तथा विश्लेषण होता है।

21. आलेख किसका छोटा रूप होता है?

उत्तर- आलेख निबंध लेखन का ही एक लघु रूप होता है।

22. 'आलेख' किन विषयों पर लिखे जाते है?

उत्तर- आलेख किसी ज्वलत समस्या,तत्कालीन घटनाक्रम महत्वपूर्ण व्यक्तियों तथा प्रसिद्ध विषयों के बारे में लिखे जाते है।

23. फीचर का प्रारम्भ कैसा होता है?

उत्तर- फीचर का आरम्भ आकर्षक, कलात्मक तथा उत्सुकतापूर्ण होता है।

24. फीचर और समाचार लेखन में एक अन्तर बताइए?

उत्तर- समाचार लेखन में सूचना देना आवश्यक होता है, फीचर लेखन में सूचना के साथ मनोरंजन भी जुड़ जाता है। समाचार की भाषा सरल तथा विवरणात्मक होती है फीचर की भाषा शैली साहित्यिक होती है।

25. फीचर से आप क्या समझते है? लिखिए।

उत्तर- जब कोई लेखक किसी घटना को इस प्रकार सजीव और रोचक शैली में प्रस्तुत करता है कि उसका स्वरूप पूर्णत: स्पष्ट हो जाए तो उसको फीचर कहते हैं।

शेखावाटी मिशन - 100

अभिव्यक्ति और माध्यय

लघुत्तरात्मक प्रश्न -

1. **भारत में इंटरनेट पत्रिका का प्रारम्भ किस प्रकार हुआ? संक्षेप में लिखिए।**

उत्तर- भारत में इंटरनेट पत्रिका का पहला दौर 1993 में शुरू हुआ। दूसरा दौर 2003 से शुरू हुआ। पहले दौर में भारत में भी प्रयोग हुये, डॉटकाम का तूफान आया और शीघ्र चला गया। अंत में वे ही टिके रह पाये जो मीडिया उद्योग में पहले से थे। रीडिफ भारत की पहली साइट है जो गम्भीरता से इंटरनेट पत्रकारिता कर रही है।

2. **श्रोता या पाठकों को बांधकर रखने की दृष्टि से प्रिंट माध्यम रेडियों और टी.वी. में सबसे सशक्त माध्यम कौन है तथा क्यों?**

उत्तर- श्रोताओं या पाठकों को बाँधकर रखने की दृष्टि से सबसे शक्तिशाली माध्यम टीवी है। टी.वी में कोई घटना चित्र सहित दिखाई जाती है, उसके बारे में बताया जाता है तथा उसकी सत्यता की पुष्टि प्रत्यक्षदर्शियों को दिखाकर और उनकी बातें सुनाकर की जाती है।

3. **मोबाइल फोन वरदान या अभिशाप पर एक आलेख लिखिए।**

उत्तर- मोबाइल एक उपयोगी यंत्र है अपनी बात दूसरे तक पहुँचाने तथा उसकी बात सुनने में यह यंत्र हमारी सहायता करता है। अत्यन्त कम भार का होने के कारण इसको अपने पास रखना और एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाना ले जाना बहुत आसान है यह संचार क्रांति का युग है। इस क्रांति में मोबाइल का बड़ा योगदान है मोबाइल के अनेक लाभों को देखते हुए यह एक वरदान ही कहा जायेगा। किन्तु इसका दुरूपयोग करने से यह अभिशाप भी बन जाता है।

4. **टेलीविजन से जुड़ी कमियाँ और विशेषताएँ लिखिए।**

उत्तर- **टेलीविजन की विशेषताएँ** - यह एक दृश्य एवं श्रव्य माध्यम है इसमें अनपढ व्यक्ति भी समाचार देख व सुन सकता है। इसमें भी समाचार उलटा पिरामिड शैली में लिखा जाता है।

कमियाँ - किसी की छवि को बिगाड़ सकता है, अनेक बार छोटी-छोटी बातों को बार-बार दिखाया जाता है। मामूलि घटना को बढाचढ़ा कर दिखाया जाता है, सत्यता का अवभाव होता है।

5. **प्रिंट मीड़िया, रेडियों माध्ययों से प्रत्येक से संबंधित दो-दो कमियाँ लिखिए।**

उत्तर- **प्रिंट मीडिया** - कमियाँ - 1. निरक्षरो के लिए यह किसी काम का नहीं है।

2. घटनाओं को तुरन्त पाठको तक नहीं पहुँचाया जा सकता।

रेडियो - कमियाँ - 1. किसी समाचार को आरम्भ से अंत तक सुनने की बाध्यता।

2. किसी सूचना का सन्दर्भ के लिए सुरक्षित रखना सम्भव नहीं है।

6. **मुद्रित माध्यम के लेखक और पत्रकारों को क्या सावधानी रखनी पड़ती है?**

उत्तर- मुद्रित माध्यम के लेखक और पत्रकारों को अपने पाठकों को भाषा ज्ञान, शैक्षिक योग्यता तथा रूचियों का ध्यान रखना पड़ता है उनको प्रकाशन के लिए प्राप्त सामग्री की समय सीमा के प्रति भी सावधान रहना होता है, उनको सामग्री की शब्द सीमा का भी ध्यान रखना होता है। उन्हें प्रकाशित सामग्री को छापने से पूर्व शुद्ध करने में पूरी सावधानी रखनी होती है। लेखन में तारतम्यता और स्वाभाविक प्रवाह बनाये रखना भी जरूरी होता है।

7. **हिन्दी में नेट पत्रकारिता के बारे में आप क्या जानते है, संक्षेप में लिखिए।**

उत्तर- हिन्दी में नेट पत्रकारिता 'वेबदुनिया' के साथ शुरू हुई। इंदौर के नयी दुनिया समूह से शुरू हुआ। यह पोर्टल हिन्दी का सम्पूर्ण पोर्टल है 'जागरण' अमर उजाला, हिन्दुस्तान भास्कर, राजस्थान पत्रिका आदि ने विश्व जाल में अपनी उपस्थिति दर्ज करनी शुरू कर दी है। इनके वेब संस्करण शुरू किये। 'प्रभासाक्षी' नामक अखबार प्रिंट रूप में न

शेखावाटी मिशन - 100

होकर केवल इंटरनेट पर ही उपलब्ध है।

8. इंटरनेट पत्रकारिता के विकास में सरकार के सहयोग के बारे में विचार लिखिए।

उत्तर- इंटरनेट पत्रकारिता के विकास में सरकार भी प्रचुर मात्रा में सहयोग कर रही है सरकार के सभी मंत्रालय, विभाग, सार्वजनिक उपक्रम और बैंकों ने अपने अनुभाग प्रारम्भ किये है जो चाहे कुछ स्थानों पर आज तकनीकी उपेक्षा के शिकार हैं फिर भी डाटाबेस तो तैयार हो ही रहा है ये सभी मिलकर हिन्दी की ऑनलाइन पत्रकारिता का मार्ग प्रशस्त कर रहे है।

9. उलटा पिरामिड शैली में समाचार के कितने भाग होते है उनके बारे में सामान्य जानकारी दीजिए?

उत्तर- उलटा पिरामिड शैली में समाचार के तीन भाग होते है –

1. इंट्रो 2. बॉडी 3. समापन

समाचार के इंट्रों को लीड या हिन्दी में मुखड़ा भी कहते है। यह खबर का मूल तत्व होता है। जिसे प्रथम दो या तीन पंक्तियों में बताया जाता है।

बॉडी में समाचार का विस्तृत ब्यौरा दिया जाता है जो घटते हुए महत्वक्रम में दिया जाता है।

अन्त में समापन होता है।

10. आज की तनावपूर्ण जीवन शैली पर एक फीचर लिखिए?

उत्तर- विकास और प्रगति के दौर में जहाँ मनुष्य को सुख सुविधाओं की अमूल्य भेट प्रदान की है वही उसके मानसिक तनाव के जंजाल को भी उसके पीछे लगा दिया है। वह उचित अनुचित सभी तरीकों से वैभव, सत्ता और सामाजिक प्रतिष्ठा पाने को बैचेन है, इन सब को पाने के लिए उसे नाना प्रकार के तनावों को झेलना पड़ता है। माता-पिता को बच्चों के अच्छे लालन – पालन और उत्तम शिक्षा दिलाने का तनाव है। बेरोजगारी का तनाव है, युवाओं को अच्छी नौकरी दिलाने व व्यवसाय पाने का तनाव है। अब तो राह चलते लुटने तक का तनाव है। बीमारी का तनाव है। आयकर वालों के छापों का तनाव है। गृहस्थ ही नहीं नेता, अभिनेता, साधु-संत और कलाकार सब इस तनाव के आतंक से व्याकुल हैं। जीवनशैली में सादगीपूर्ण जीवन और ईश्वर में विश्वास से युक्त बनकर ही इस प्रेत से पीछा छूट सकता है।

11. जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम क्या है? इसके अन्तर्गत क्या-क्या माध्यम आते है?

उत्तर- जन संचार का सबसे पुराना माध्यम मनुष्य है पौराणिककाल में देवर्षि नारद को प्रथम समाचार वाचक माना जा सकता है। महाभारत काल में संजय की परिकल्पना भी समृद्ध संचार व्यवस्था को इंगित करती है। शिलालेख व पट्टिका का प्रयोग गुफा चित्र, नौटंकी, सांग आदि इसी माध्यम के अन्तर्गत आते है।

12. फोन – इन का क्या आशय है?

उत्तर- टी.वी. में सूचनाओं के दूसरे चरण ड्राई एंकर के पश्चात् समाचार का विस्तार होता है। एकंर घटनास्थल पर उपस्थित संवाददाता से फोन पर बात करके सूचनाएँ दर्शकों तक पहुँचाता है। इसमें रिपोटर घटनास्थल पर मौजूद रहता है। तथा घटनास्थल से जो भी जानकारी मिलती है रिपोर्टर उन्हें ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाता है।

13. इंटरनेट से जुड़ी विशेषताएँ और कमियाँ लिखिए?

उत्तर- **इंटरनेट – विशेषताएँ** – चौबीसों घंटे समाचार व सूचना उपलब्ध पुरे समाचार पत्र, पत्रिकाएँ अनेक पुस्तके इंटरनेट पर उपलब्ध सभी जानकारीयों के स्त्रोत संग्रहणीय।

कमियाँ – अश्लीलता, दुष्प्रचार, गंदगी फैलाने का साधन विश्वसनीयता का अभाव, सांस्कृतिक प्रदुषण का माध्यम।

शेखावाटी मिशन – 100

पारिभाषिक शब्दावली

Account	-	लेखा
Act	-	अधिनियम
Administration	-	प्रशासन
Adopt	-	अपनाना
Affairs	-	मामले
Affidavit	-	शपथ-पत्र
Agitiation	-	आंदोलन
Agreement	-	सहमति-अनुबंध
Allowance	-	भत्ता
Approval	-	अनुमोदन
Authority	-	अधिकारी
Debt	-	ऋण
Boycott	-	बहिष्कार
Bribe	-	रिश्वत/घूस
Brief	-	संक्षिप्त
Bureaucracy	-	नौकरशाही/अधिकारीतंत्र
Cabinet	-	मंत्रिमण्डल
Census	-	जनगणना
Circular	-	परिपत्र
Cade	-	संहिता
Communication	-	संचार
Commission	-	आयोग
Contract	-	समझौता/संविदा
Correspondence	-	पत्राचार
Data	-	आंकड़े
Delimitation	-	परिसीमन
Demiofficial	-	अर्द्धशासकीय
Deputation	-	प्रतिनियुक्ति
Discrimination	-	भेदभाव
Draft	-	प्रारूप
Editing	-	संपादन
Edition	-	संस्करण
Editorial	-	संपादकीय
Eligibility	-	पात्रता/योग्यता
Employee	-	कर्मचारी
Federation	-	परिसंघ
Formal	-	औपचारिक
Gazetted	-	राजपत्रिक
Grant	-	अनुदान
Human rights	-	मानवाधिकार
Honorarium	-	मानदेय
Investment	-	निवेश करना
Judicial	-	न्यायिक
Judgement	-	निर्णय
Licence	-	अनुज्ञप्ति
Manifesto	-	घोषणा-पत्र
Memo	-	ज्ञापन
Movement	-	आंदोलन
Notification	-	अधिसूचना
Pact	-	समझौता
Preface	-	प्रस्तावना
Publication	-	प्रकाशन
Quorum	-	गणपूर्ति
Qualification	-	योग्यता
Random	-	यादृच्छिक
Relieve	-	भारमुक्त
Reminder	-	अनुस्मारक
Resignation	-	त्याग-पत्र
Shedule	-	अनुसूची
Sanction	-	स्वीकृति
Strike	-	हड़ताल
Taka dver	-	कार्यभार लेना
Tender	-	निविदा
Tribunal	-	अधिकरण
Verification	-	सत्यापन
Warrant	-	अधिपत्र
Warrant	-	अधिपत्र

शेखावाटी मिशन - 100

Withalraw	-	वापसी
Zonal	-	आंचलिक
Action	-	कार्यवाही
Autonomous	-	स्वायत्
Ballot	-	मतपत्र
Broadcast	-	प्रसारण
Broad cast	-	प्रसारण
Casual	-	आरोप-पत्र
Charge sheet	-	आकस्मिक
Consultant	-	आचार संहिता
Comments	-	टिप्पणी
Consultant	-	परामर्श
Deal	-	सौदा
Description	-	विवरण
Designation	-	पदनाम
Despatch	-	प्रेषण
Document	-	दस्तावेज
Execute	-	निस्पादन करना
Clossary	-	परिभाषा/शब्दावली
Investigation	-	अन्वेषण/खोज
Objection	-	आपत्ति
Ordinance	-	अध्यादेश
Record	-	अभिलेख
Sequence	-	अनुक्रम

शेखावाटी मिशन – 100